mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-04 अंक-253 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
12 सितंबर 2024 गुरुवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

इस बार आईपीएल...
@ पेज 7

फिर पानी-पानी हुआ आधा देश, बिगड़े हालात

एमपी के 21 जिलों में झमाझम बारिश, राजस्थान में डैम ओवरफ्लो

नोएडा स्टेडियम में पानी भरा, न्यूजीलैंड-अफगानिस्तान टेस्ट नहीं हुआ

नई दिल्ली (एजेंसी)। मध्य प्रदेश में 2 दिनों से लगातार बारिश हो रही है। बुधवार को 21 जिलों में भारी बारिश का अनुमान जताया गया है। विदिशा, रायसेन, सीहोर, नर्मदापुरम, हरदा, गुना और अशोकनगर में रेड अलर्ट जारी किया है। सितंबर के सबसे स्ट्रॉन्ग सिस्टम से पूरा मध्यप्रदेश तरबतर हो रहा है। भोपाल, नर्मदापुरम समेत प्रदेश के कई जिलों में मंगलवार से बारिश का दौर जारी है। मौसम विभाग ने बुधवार को विदिशा, रायसेन, सीहोर, नर्मदापुरम, हरदा, गुना और अशोकनगर में अति भारी बारिश का रेड अलर्ट जारी किया है। राजस्थान के जयपुर में आज तेज हवा के साथ बारिश हो रही है। ब्यावर जिले का नंदा बांध 25 साल बाद ओवरफ्लो हुआ तो लोग बैंड बाजे के साथ नाचने-गाने लगे। राज्य में 15 सितंबर तक बारिश का अनुमान है। दिल्ली-एनसीआर में बारिश की वजह से नोएडा क्रिकेट स्टेडियम में पानी भर गया है। इसकी वजह से न्यूजीलैंड और अफगानिस्तान के बीच पहला टेस्ट मैच तीसरे दिन भी नहीं खेला जा सका। छत्तीसगढ़ में पिछले दो दिनों से बारिश हो रही है। इंद्रावती व चिंतावागु नदी उफान पर है। सुकमा और बीजापुर का महाराष्ट्र, ओडिशा, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना से संपर्क टूट गया है। आज भी यलो अलर्ट है।

संक्षिप्त समाचार

भाषा से भाषा, क्षेत्र से क्षेत्र, धर्म से धर्म में भेदभाव

शाह ने राहुल की 'विभाजनकारी सोच' पर बोला हमला

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर देश को बांटने की साजिश करने वाली ताकतों का साथ देने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी और कांग्रेस के लिए देश विरोधी बयान देना एक आदत बन गई है। अमित शाह का यह बयान पीएम मोदी और केंद्र सरकार के खिलाफ राहुल गांधी के अमेरिका में दिए बयानों के बाद आया है। गृह मंत्री ने कहा कि राहुल गांधी विदेशी मंचों पर भारत विरोधी बातें करते हैं। भाषा से भाषा, क्षेत्र से क्षेत्र और धर्म से धर्म में भेदभाव लाने

की बात करना राहुल गांधी की विभाजनकारी मानसिकता को दिखाता है। उन्होंने आरक्षण को लेकर कांग्रेस नेता को चुनौती देते हुए कहा कि जबतक बीजेपी है, आरक्षण को कोई छू भी नहीं सकता। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, देशविरोधी बातें करना और देश को तोड़ने वाली ताकतों के साथ खड़े होना राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी की आदत सी बन गई है। चाहे जम्मू-कश्मीर में जेकेएनसी के देशविरोधी और आरक्षण विरोधी एजेंडे का समर्थन करना हो, या फिर विदेशी मंचों पर भारत विरोधी बातें करनी हो, राहुल गांधी ने देश की सुरक्षा और भावना को हमेशा आहत किया है। भाषा से भाषा, क्षेत्र से क्षेत्र और धर्म से धर्म में भेदभाव लाने की बात करना राहुल गांधी की विभाजनकारी सोच को दर्शाता है।

नमाज से 5 मिनट पहले हिंदू बंद करें पूजा और लाउडस्पीकर

दुर्गा पूजा से पहले बांग्लादेश की मोहम्मद यूनुस सरकार का तालिबानी आदेश

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश में मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार में गृह मंत्रालय ने तालिबानी फरमान जारी किया है। मंगलवार 10 सितम्बर को जारी बांग्लादेश के गृह मंत्रालय के आदेश में दुर्गा पूजा से पहले देश के अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय को निर्देशित किया गया है। इसमें पूजा समितियों को अजान

और नमाज से पांच मिनट पहले दुर्गा पूजा से जुड़े अनुष्ठान और साउंड सिस्टम बंद करने का निर्देश दिया गया है। इस आदेश से हिंदू समुदाय में आक्रोश है। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के आदेश की तुलना लोग तालिबानी फरमान से कर रहे हैं। इस फैसले का विरोध भी किया जा रहा है। बांग्लादेश की मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, गृह मंत्रालय के सलाहकार लेफ्टिनेंट जनरल (रि) मोहम्मद जहांगीर आलम चौधरी ने मंगलवार को नेताओं से मुलाकात की थी।

मणिपुर को छावनी बनाकर भी हिंसा नहीं रोक पा रही सरकार

● अब तो लोग भी देने लगे अल्टीमेटम, अब तक 200 लोगों की मौत

● सुरक्षा बलों पर मूकदर्शक बने रहने का आरोप लगा रहे हैं आम लोग

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने मणिपुर से असम राइफल्स की दो बटालियनों को वापस बुलाया तो अगले ही दिन सीआरपीएफ की दो बटालियनें वहां भेज भी दीं। पिछले वर्ष 3 मई को आरक्षण के मुद्दे पर शुरू हुई जातीय हिंसा में अब तक 200 लोगों की मौत हो चुकी है।

बीते कुछ महीनों में मणिपुर लगभग शांत रहा था, लेकिन फिर से हिंसा का दौर शुरू हो गया। चिंता की बात है कि हमलों के लिए ऐसे-ऐसे हथियार इस्तेमाल किए जा रहे हैं जो युद्ध के दौरान उपयोग में आते हैं। सवाल है कि आखिर ऐसे हथियार अराजक तत्वों तक पहुंच कैसे रहे हैं। सवाल यह भी है कि इतनी भारी संख्या में सुरक्षा बलों की मौजूदगी के बावजूद स्थिति नियंत्रण में क्यों नहीं आ रही है।

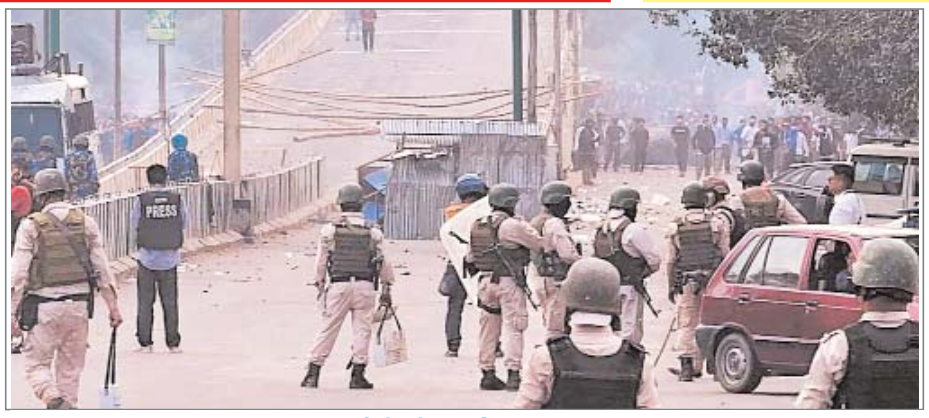

16 महीने से शांति का इंतजार

पहाड़ों पर बसे कुकी समुदाय और घाटी में रह रहे मैतई समुदाय के बीच छिड़ा संग्राम 16 महीने बाद भी खत्म नहीं होने की वजह से मणिपुर के लोगों में निराशा का माहौल छा रहा है। प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह मैतई समुदाय से हैं। ऐसे में उन्हें विरोधी कुकी समुदाय की नाराजगी का सामना करना पड़ रहा है। यही वजह है कि पिछले दिनों हुई हिंसा में कई बीजेपी नेताओं को भी निशाना बनाया गया है। बीते शनिवार को हुई ताजा हिंसा में पांच लोगों की मौत हुई थी।

संघ प्रमुख ने भी जताई थी चिंता

संघ प्रमुख मोहन भागवत ने बीते 10 जून को मणिपुर में शांति लाने पर जोर दिया तो एक आस जगी कि अब वहां उपद्रवियों पर और ज्यादा लगाम कसा जाएगा। भागवत के बयान के बाद केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने उच्चस्तरीय बैठक की। उसमें बड़े-बड़े अफसरों को निर्देश दिया गया कि जैसे भी हो मणिपुर को हिंसा के दौर से बाहर निकालना है लेकिन आज तक यह सपना ही रह गया है। अब भी उपद्रवी जब चाहते हैं, जहां चाहते हैं हमले कर रहे हैं। फिर सुरक्षा बलों की मौजूदगी का क्या मतलब रह जाता है। मणिपुर एक बॉर्डर स्टेट है, इसलिए चुनौतियां थोड़ी गंभीर तो हैं। पड़ोसी देश उपद्रवियों को हथियार और गोला-बारूद दे रहे हैं। स्थिति इतनी भयावह है कि सुरक्षा बलों को एंटी ड्रोन सिस्टम तैनात करने पड़ गए हैं। मैतेई और कुकी, दोनों समुदायों के पास घातक हथियारों का जखीरा है और वो एक-दूसरे के खिलाफ हवाई हमले भी कर रहे हैं। उन्हें पड़ोसी देशों से हथियारों की सप्लाई तो हो ही रही है, वो हथियारों की लूट भी कर रहे हैं। ऐसे निराशाजनक माहौल में मणिपुर के लोगों ने सुरक्षा बलों की मौजूदगी पर भी सवाल खड़ा करना शुरू कर दिया है। उनका आरोप है कि हिंसा के दौर में सुरक्षा बल मूकदर्शक बने रहते हैं। वो पूछ रहे हैं कि ऐसी तैनाती का क्या मतलब है।

कनाडा बॉर्डर पर हजारों की तादाद में जमा हैं भारतीय

● गैरकानूनी तरीके से एंट्री की कोशिश, टेंशन में अमेरिका

ओटावा (एजेंसी)। अमेरिका में कनाडा के रास्ते से गैरकानूनी तरीके से एंट्री करने वाले भारतीयों की संख्या में हालिया समय में बढ़ोत्तरी हुई है। खासतौर से उत्तरी अमेरिकी बॉर्डर पर ऐसे भारतीय प्रवासियों

की संख्या में बहुत तेजी से वृद्धि हुई है, जो कनाडा से अमेरिका में एंट्री ले रहे हैं। एनपीआर डॉट ऑर्गेनाइजेशन की रिपोर्ट के मुताबिक, भारत से आए अप्रवासियों के समूह कनाडा की सीमा के पास क्लिंटन काउंटी में पहुंच रहे हैं। यहां उनको दूसरे लोग मिल जाते हैं।

सेमीकंडक्टर-इंडस्ट्री को ड्राइव करने में

अहम भूमिका निभाएगा भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)। ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो मार्ट में बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सेमीकॉन इंडिया 2024 प्रदर्शनी की शुरुआत की। पीएम मोदी ने इस दौरान वहां उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि 21वीं सदी के भारत में चिप कभी डाउन नहीं होंगी। आज का भारत दुनिया को भरोसा देता है कि जब चिप डाउन होंगी, तब आप भारत पर दांव लगा सकते हैं। उन्होंने आगे कहा कि चिप डिजाइनिंग की दुनिया में 20 फीसदी टैलेंट का योगदान भारत कर रहा है और इसका निरंतर विस्तार हो रहा है। भारत का फोकस अपने स्टूडेंट्स और प्रोफेशनल्स को सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री रेडी बनाने पर है। ये इवेंट नॉलेज पार्क 2 में 13 सितंबर तक चलेगा। इस प्रदर्शनी में दुनियाभर की लीडिंग सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग कंपनियां हिस्सा ले रही हैं। सीएम योगी आदित्यनाथ और केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव उनके साथ मौजूद रहे। सेमीकॉन इंडिया 2024 के शेड्यूल के अनुसार, 11 से 13 सितंबर तक तीनों दिन सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक प्रदर्शनी आयोजित की जाएगी जिसमें दुनियाभर के सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरर अपने

स्टॉल लगे हुए हैं। भारत दुनिया का 8वां देश है जहां ग्लोबल सेमीकंडक्टर से जुड़ा ये भव्य आयोजन हो रहा है और मैं कह सकता हूं कि यह भारत में रहने का सही समय है..आप सही समय पर सही जगह पर हैं...आज भारत दुनिया को भरोसा देता है। आज भारत आत्म निर्भर होने के लिए मैन्युफैक्चरिंग बढ़ा रहा है। आज भारत बड़े पैमाने पर ग्रीन ट्रांजेक्शन कर रहा है। भारत में डेटा सेंटर की डिमांड लगातार बढ़ रही है। यानी ग्लोबल सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री को ड्राइव करने में भारत अहम भूमिका निभाने जा रहा है। हम भारत में सेमीकंडक्टर के प्रोडक्शन को बढ़ाने पर फोकस कर रहे हैं। सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग को आगे बढ़ाने के लिए हमने बहुत सारे कदम उठाए हैं। भारत में सेमीकंडक्टर फैसिलिटी लगाने के लिए सरकार 50 फीसदी का सपोर्ट दे रही है।

● सेमीकॉन इंडिया 2024 प्रदर्शनी के उद्घाटन में बोले प्रधानमंत्री मोदी

13 सितंबर तक चलेगा ये इवेंट

भारतवंशी कमला हैरिस जीतीं अमेरिकी प्रेसिडेंशियल डिबेट

5 सर्वे में उन्हें बेहतर माना

● ट्रम्प ने पर्सनल अटैक किए, वे मुस्कुराकर जवाब देती रहीं

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका में राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रम्प और भारतवंशी कमला हैरिस के बीच बुधवार को प्रेसिडेंशियल डिबेट हुई। दोनों ने 90 मिनट बहस की। डिबेट शुरू होने से पहले कमला ट्रम्प के पोडियम तक पहुंचीं और उनसे हाथ मिलाया। डिबेट में ट्रम्प ने कमला पर पर्सनल अटैक किए। उन्हों कहा, कमला वामपंथी हैं, उनके पिता कम्युनिस्ट हैं। उन्होंने कमला को अच्छे से वामपंथ सिखाया है। कमला क्या हैं इससे मुझे फर्क नहीं पड़ता पर मैंने कहीं पढ़ा था कि वे अश्वेत नहीं है। ट्रम्प के इन आरोपों पर कमला ने कुछ नहीं कहा, बस मुस्कुराती रहीं।

संजौली मस्जिद के विरोध में बेकाबू हुई भीड़, बवाल

तोड़ डाले पुलिस के बैरिकेड, लाठीचार्ज, वॉटर कैनन का इस्तेमाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। शिमला की संजौली मस्जिद को लेकर विवाद और ज्यादा गहरा गया है। प्रदर्शन कर रहे हिंदू संगठनों ने अब पुलिस बैरिकेड तोड़ डाले हैं, वे आगे की तरफ बढ़ चुके हैं। मस्जिद से कुछ दूर ही अब विरोध प्रदर्शन किया जा रहा है। असल में विरोध कर रही भीड़ मस्जिद के पास जाना चाहती है, वहां प्रदर्शन करना चाहती है, लेकिन पुलिस ने इसकी इजाजत नहीं दी।

दावा तो हुआ था कि कानून व्यवस्था पूरी तरह नियंत्रण में है, लेकिन इस समय भीड़ पुलिस पर ही भारी पड़ती दिख रही है। जो वीडियो सामने आ रहे हैं उसमें भीड़ ने कई पुलिस बैरिकेड तोड़ डाले हैं, उनकी तरफ से पुलिस को ही पीछे धकेलने का काम

हुआ है। बेकाबू हुई भीड़ को काबू में करने के लिए पुलिस को भी बल प्रयोग करना पड़ा है। एक तरफ लाठीचार्ज के जरिए पलटवार हुआ है, दूसरी तरफ वॉटर कैनन के जरिए भी भीड़ को तितर-बितर करने की कवायद दिखी है।

हाईकोर्ट ने 4 आतंकियों की फांसी को उम्रकैद में बदला

मोदी की सभा में किए थे ब्लास्ट, पटना सिविल कोर्ट ने दी थी फांसी की सजा

पटना (एजेंसी)। पटना के गांधी मैदान में 27 अक्टूबर 2013 को नरेंद्र मोदी की हुंकार रैली में हुए सीरियल ब्लास्ट में पटना हाईकोर्ट ने 4 आतंकियों की फांसी को उम्रकैद में बदला है। सिविल कोर्ट ने सभी को फांसी की सजा सुनाई थी। हाईकोर्ट ने बाकी 2 दोषियों की उम्रकैद की सजा को बरकरार रखा है। ब्लास्ट में निचली अदालत ने 4 को फांसी और 2 को उम्रकैद की सजा सुनाई थी। दोषियों के वकील इमरान घानी ने बताया कि अपील पर सुनवाई करते हुए 4 दोषियों को आजीवन कारावास (30 साल) की सजा सुनाई है, जबकि 2 दोषियों के लिए निचली अदालत के फैसले को सुरक्षित रखा है। यह फैसला जस्टिस आशुतोष कुमार की खंडपीठ ने दिया है। नुमान अंसारी, मोहम्मद मजीबुल्ला, हैदर अली, इम्तियाज आलम को निचली अदालत ने फांसी की सजा सुनाई थी, जिसे अब हाईकोर्ट ने उम्रकैद में बदल दिया है। वहीं, उमैर सिद्दीकी और अजरहुद्दीन कुरैशी के लिए निचली अदालत का जो आजीवन कारावास का फैसला है, उसे यथावत रखा है। बचाव पक्ष के वकील इमारन घानी ने बताया कि इस फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाएंगे। 27 अक्टूबर 2013 को पटना में भाजपा की हुंकार रैली चल रही थी। गांधी मैदान भीड़ से खचाखच भरा था।

न बूथ बदलें ना रैलियों पर लगाई जाए रोक

जम्मू-कश्मीर चुनाव के लिए आयोग की नई गाइडलाइंस

कार्यकर्ताओं को बिना वजह परेशान न करने के भी निर्देश

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव में वोटिंग प्रतिशत बढ़ाने के लिए चुनाव आयोग ने कई दिशा निर्देश जारी किए हैं। आयोग ने प्रशासन और सुरक्षा अधिकारियों से कहा है कि राजनीतिक दलों के नेताओं और कार्यकर्ताओं को बिना वजह परेशान न किया जाए। सुरक्षा के नाम पर पोलिंग बूथ को न तो बदला जाए और न ही किसी दूसरी जगह शिफ्ट किया जाए। इसके अलावा आखिरी समय पर रैलियों को रद्द करने पर भी रोक लगा दी। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार और चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और सुखबीर सिंह संधू ने पिछले महीने जम्मू-कश्मीर का दौरा किया था। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों से साफ कहा था कि किसी भी तरह का पक्षपात नहीं चलेगा।

मुख्य सूचना आयुक्त एवं सूचना आयुक्तों की नियुक्ति

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्य सूचना आयोग में मुख्य सूचना आयुक्त एवं सूचना आयुक्तों की नियुक्ति के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंगलवार को चयन समिति की बैठक हुई। बैठक में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री श्रीमती सम्पतियां उईके एवं नेता प्रतिपक्ष श्री उमंग सिंघार शामिल हुए। चयन समिति द्वारा मुख्य सूचना आयुक्त के पद के लिए श्री विजय यादव (सेवानिवृत्त विशेष पुलिस महानिदेशक) का चयन किया गया। साथ ही सूचना आयुक्तों की नियुक्ति के लिए श्री उमाशंकर पचौरी (शिक्षाविद्), श्रीमती वंदना गांधी (समाजसेवी) एवं श्री ओमकार नाथ (सेवानिवृत्त जज) चयनित किये गये।

निगम मंडलों में विभिन्न पदों पर पूर्व के मनोनयन किये गए निरस्त

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सामान्य प्रशासन विभाग ने आज आदेश जारी कर निगम , मंडलों , समितियों , परिषदों , प्राधिकरणों एवं अन्य संस्थाओं के अध्यक्ष , उपाध्यक्ष , संचालक , सदस्यों के पूर्व में किए गए मनोनयन को निरस्त कर दिया है। आदेश में यह भी कहा गया है कि जिन उपक्रमों के अध्यक्ष का कार्यभार विभागीय अपर मुख्य सचिव , प्रमुख सचिव या सचिव ने प्राप्त किया था , उनके कार्यभार अब भारसाधक मंत्री को सौंपा जाना है। सामान्य प्रशासन विभाग के आदेश में कहा गया है कि ऐसे उपक्रम जिनके नियमों में अध्यक्ष की नियुक्ति या मनोनयन की कोई विशेष व्यवस्था है , वहाँ अध्यक्ष का प्रभार उसी प्राधिकारी के पास रहेगा ,

सीएम राइज, मॉडल और जिला-स्तरीय उत्कृष्ट विद्यालयों के लिये शासकीय शिक्षकों से आवेदन आमंत्रित

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। स्कूल शिक्षा विभाग की महत्वाकांक्षी योजना सीएम राइज विद्यालय, मॉडल स्कूल एवं जिला-स्तरीय उत्कृष्ट विद्यालयों में (प्राथमिक, माध्यमिक, हाई और हायर सेकण्डरी स्तर के) प्रशासकीय पद के लिये शासकीय शिक्षकों के आवेदन आमंत्रित किये गये है। स्कूल शिक्षा विभाग ने जानकारी दी है कि ऐसे शिक्षक, जो शिक्षा विभाग के शासकीय विद्यालयों में कार्यरत हैं तथा शिक्षा के क्षेत्र में उच्चतम आयाम स्थापित करने की चुनौती को स्वीकार करने की इच्छा-शक्ति रखते हैं, तो यह अवसर उनके लिये है। इसके लिये ऑनलाइन आवेदन विमर्श पोर्टल पर 17 सितम्बर 2024 तक किये जा सकेंगे। शैक्षणिक सत्र 2024-25 में शासकीय विद्यालयों में रिक्त पदों की अतिथि शिक्षकों की व्यवस्था के लिये आवेदकों द्वारा जीएफएमएस पोर्टल पर शाला विकल्प का चयन एवं संशोधन अब 12 सितम्बर तक किया जा सकेगा। जिन आवेदकों का किसी कारणवश स्कोर कार्ड के लिये आवेदन में दर्ज योग्यता का सत्यापन नहीं हो सका है, वे 11 सितम्बर तक यह कार्य करा सकेंगे। इसके साथ ही आवेदकों द्वारा दर्ज मध्यप्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा-2018 एवं उसके उपरांत उत्तीर्ण की जानकारी का संकुल प्राचार्य द्वारा जीएफएमएस पोर्टल पर सत्यापन का कार्य भी इसी दिन 11 सितम्बर को ही कराना होगा। इस संबंध में विस्तृत निर्देश समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी, संकुल प्राचार्य, हाई और हायर सेकेण्डरी स्कूल को भी जारी किये गये हैं।

महू, खरगोन के बाद अब झाबुआ, थांदला भी जल्द होंगे पूर्ण स्मार्ट मीटरीकृत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। केंद्रीय ऊर्जा मंत्रालय एवं मप्र ऊर्जा विभाग की सर्वोच्च प्राथमिकता वाले अत्याधुनिक स्मार्ट मीटर की स्थापना की दिशा में पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी इंदौर अग्रणी भूमिका निभा रही है। पश्चिम क्षेत्र कंपनी के महू, खरगोन शहर पूर्व में पूर्ण स्मार्ट मीटर वाले नगर घोषित हो गए हैं। अब एक सप्ताह बाद झाबुआ एवं थांदला नगर भी पूर्ण स्मार्ट मीटरीकृत नगर बन जाएंगे। प्रदेश के ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने स्मार्ट मीटर परियोजना का श्रेष्ठ संचालन करने पर पश्चिम क्षेत्र कंपनी के कार्मिकों को बधाई दी है। पश्चिम क्षेत्र कंपनी में अब तक सात लाख 40 हजार अत्याधुनिक स्मार्ट मीटर लग चुके हैं। वर्तमान में चौदह जिलों में स्मार्ट मीटर तेजी से लगाने का कार्य जारी है। कंपनी क्षेत्र में सबसे ज्यादा इंदौर शहर में करीब सवा तीन लाख स्मार्ट मीटर स्थापित हो चुके हैं। इसके बाद उज्जैन, देवास, रतलाम में 46 हजार से 80 हजार स्मार्ट मीटर लगे हैं। खरगोन में शत-प्रतिशत 43 हजार, महू में शत प्रतिशत 15 हजार स्मार्ट मीटर लगे हैं। इसी तरह झाबुआ में 13 हजार एवं थांदला में साढ़े 5 हजार स्मार्ट मीटर लग चुके हैं। झाबुआ एवं थांदला में करीब 150 थ्री फेज स्मार्ट मीटर अगले एक सप्ताह में लगा दिए जाएंगे। इसी के साथ झाबुआ और थांदला दोनों शहर में पूर्ण स्मार्ट मीटर वाले हो जाएंगे। पश्चिम क्षेत्र के अन्य 25 नगरीय निकायों में भी तेजी से स्मार्ट मीटरीकरण कार्य जारी है। प्रबंध निदेशक कार्यालय स्तर पर इसकी प्रतिदिन समीक्षा की जाती है। डिजिटलाइजेशन एवं सूचना प्रौद्योगिकी के बेहतर उपयोग के लिए सफल साबित हो रहे इन स्मार्ट मीटरों से संबंधित कामकाज देखने के लिए अब तक 25 से ज्यादा प्रतिनिधि मंडल इंदौर आ चुके हैं।

माता-पिता-गुरूजनों का समान और सत्य का पालन करें विद्यार्थी-राज्यपाल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि विद्यार्थी जीवन में दीक्षांत शपथ का हर दिन मनन करें, सत्य का हमेशा पालन करें। अपने माता-पिता और गुरूजनों का सम्मान करें।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के द्वारा युवाओं को उनकी मौलिक प्रतिभा को निखारने का अवसर देकर विकसित भारत के निर्माण की महती जिम्मेदारी सौंपी है। शिक्षक इस दिशा में विद्यार्थियों का मार्ग दर्शन करें। स्वयं को नवीनतम ज्ञान और तकनीक से अपडेट रखें। चुनौतियों के समाधान के लिए उन्हें प्रेरित करें। राज्यपाल श्री पटेल कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में आयोजित बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल के दीक्षांत समारोह को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की उपस्थिति में आयोजित गरिमामय कार्यक्रम में उच्च शिक्षा मंत्री श्री इंदर सिंह परमार, कुलगुरू प्रोफेसर सुरेश कुमार जैन सहित उच्च शिक्षा विभाग तथा विश्वविद्यालय के अधिकारी, संकाय तथा विभाग प्रमुख और छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। राज्यपाल श्री पटेल तथा मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल के दीक्षांत समारोह का मां सरस्वती की वंदना के साथ दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया। इससे पहले विश्वविद्यालय की शोभा-यात्रा ने स्वस्तिवाचन के साथ सभागार में प्रवेश किया। राज्यपाल श्री पटेल तथा मुख्यमंत्री डॉ. यादव के मंच पर पधारने के बाद पुलिस बैंड द्वारा राष्ट्रगान जन-गण-मन धुन प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम में अतिथिगण का शॉल, श्रीफल तथा पौधा भेंट कर अभिनंदन किया गया। राज्यपाल श्री पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बरकतउल्ला विश्वविद्यालय की स्मारिका और योग पर केंद्रित पुस्तक का विमोचन भी किया।

भूतपूर्व सैनिकों की समस्याओं का किया समाधान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भारतीय सेना के भूतपूर्व सैनिकों के लिए एक आउटरीच कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य भोपाल जिले के स्पर्श और पारिवारिक पेंशनभोगियों की शिकायतों की पहचान करना और उनका समाधान करना था। कार्यक्रम का आयोजन 3 ईएमई सेंटर, बैरागढ़ द्वारा मुख्यालय पश्चिम मध्य प्रदेश उप क्षेत्र के तत्वावधान में किया गया था। भूतपूर्व सैनिकों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए वास्तविक देखभाल और समर्थन देने की जिम्मेदारी भूतपूर्व सैनिकों की प्रकोष्ठों को सौंपी गई है। यह सभी हितधारकों के साथ लगातार बातचीत करके सभी सेना के भूतपूर्व सैनिकों और उनके निकटतम परिजनों (एनओके) के कल्याण और शिकायत निवारण के लिए एक खिड़की खोलता है। मुख्यालय पश्चिम मध्य भारत उप क्षेत्र के भूतपूर्व सैनिकों प्रकोष्ठ ने भूतपूर्व सैनिकों को बातचीत करने और समस्याओं के निवारण के लिए एक मंच प्रदान किया। एलएओ भोपाल के सीनियर एओ ने स्पर्श पर एक विस्तृत व्याख्यान दिया। कार्यक्रम के दौरान एलएओ टीम द्वारा पेंशनभोगियों की शिकायतों की मौके पर ही पहचान की गई और उनका स्पष्टीकरण किया गया

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में पक्षी अवलोकन एवं नेचर कैम्प

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल में छात्र-छात्राओं में वन, वन्य-प्राणियों एव पर्यावरण के प्रति जागरूकता तथा प्रकृति संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने की दृष्टि से भोपाल शहर एवं उसके आस-पास के ग्रामों के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिये एक दिवसीय पक्षी अवलोकन एवं नेचर कैम्प में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नवीन अरेरा कॉलोनी भोपाल के 35 छात्र/छात्राओं एवं 01 शिक्षक ने भाग लिया।

उक्त पक्षी अवलोकन एवं नेचर कैम्प मध्यप्रदेश ईको पर्यटन विकास बोर्ड के सहयोग से आयोजित किये जा रहे हैं। कार्यक्रम में स्त्रोत व्यक्ति रूप में डॉ. एस.आर. वाघमारे, एवं पक्षीविद के रूप में डॉ. संगीता राजगरी भोपाल बर्डस उपस्थित रहे। विषय-विशेषज्ञों द्वारा प्रतिभागियों को पक्षी, तितली, वन्य-प्राणी एवं वानिकी गतिविधियों की जानकारी दी गई तथा वन, वन्य-प्राणी एवं पर्यावरण से संबधित रोचक गतिविधियों कराई गई। साथ ही जैव विविधता एवं उसके संरक्षण के बारे में छात्र/छात्राओं को विषय-विशेषज्ञों द्वारा जानकारी प्रदान कर उनकी जिज्ञासाओं को शांत किया गया। तितलियों के लार्वा, प्यूपा आदि को दिखाकर तितली की लाइफ साइकल को समझाया गया। इस अवसर पर मिशन लाइफ अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण के लिये उपस्थित प्रतिभागियों द्वारा शपथ भी ली गई।

स्वच्छ भारत मिशन योजना के कार्यों का भौतिक सत्यापन करें- राज्यमंत्री बागरी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने स्वच्छ भारत मिशन योजना में स्वीकृत कार्यों के निरीक्षण और भौतिक सत्यापन के निर्देश दिए। उन्होंने कोठी नगर परिषद सतना में विशेष निधि और एसडीएमएफ राशि से स्वीकृत निर्माण कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने उपयोगी जल प्रबंधन के तहत डीपीआर तैयार कराने, मुख्यमंत्री घोषणाओं की स्वीकृति, सिंहपुर को नवीन नगर परिषद बनाने के प्रस्ताव, नगर परिषद कोठी में नई पदों की स्वीकृति और सीधी भर्ती के लिये विज्ञापन सतना शहर और ग्रामीण अंचलों में अवैध कालोनियों पर लगाम कसने और टी एंड सी.पी से नवीन कालोनियों के लिये नियमों में प्रावधान कराने पर जोर दिया। बैठक में राज्यमंत्री श्रीमती बागरी ने नगर परिषद कोठी में डॉ. अम्बेडकर जी की मूर्ति स्थापना, सामुदायिक भवन का निर्माण, कोठी तालाब का विकास, तालाब के आस-पास अतिक्रमण हटाने और रोकने के कार्यों को शीघ्र पूर्णता से करने के निर्देश दिये। अमृत 2.0 के तहत निर्माणाधीन कार्यों की शीघ्र पूर्णता, स्वच्छ भारत मिशन, प्रधानमंत्री आवास योजना, मुख्यमंत्री शहरी आवास योजना, कोठी स्टेडियम का निर्माण और नाला निर्माण कार्यों पर भी चर्चा की। राज्यमंत्री श्रीमती बागरी ने प्रधानमंत्री आवास योजना और मुख्यमंत्री शहरी आवास योजना के अंतर्गत निर्मित आवासों को एक परिसर के रूप में विकसित करने के सुझाव दिए, जिसमें सड़क, बिजली, पानी, और उद्यान जैसी सुविधाएं शामिल हों। उन्होंने संभागीय स्तर पर एक निरीक्षण समूह बनाकर निर्माणाधीन कार्यों की प्रगति और गुणवत्ता की जांच के निर्देश दिए।

पर्यावरण बचाने और जलवायु परिवर्तन के खतरों से बचाने मिशन लाइफ से जुड़ें

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पर्यावरण को बचाने और जलवायु परिवर्तन के खतरों के प्रति जागरूक होने के लिये सभी जिम्मेदार नागरिकों के लिये मिशन लाइफ से जुड़ने और इस विषय में अपने विचार रखने का अनूठा अवसर मिल रहा है। इच्छुक नागरिक पर अपने विचार 15 सितम्बर 2024 तक दे सकते हैं। उत्कृष्ट विचारों को व्यक्तिगत एवं संस्थान स्तर पर आकर्षक पुरस्कार दिये जायेंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने ग्लासगो में हुए जलवायु परिवर्तन सम्मेलन-2021 में पर्यावरण संरक्षण एवं जलवायु परिवर्तन की चुनौती के सन्दर्भ में जीवन-शैली में बदलाव के लिए विश्व समुदाय का आह्वान किया। उन्होंने भारत सरकार द्वारा मिशन लाइफ कार्यक्रम प्रारंभ किया। यह एक वैश्विक पहल है, जिसका उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जागरूक जीवन-शैली को बढ़ावा देना है। इस मिशन में सभी नागरिकों को अपने दैनिक जीवन में सरल और प्रभावी पर्यावरण-अनुकूल कार्यों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। मिशन लाइफ के सात प्रमुख विषय हैं। जल संरक्षण में पानी की बचत के उपाय अपनाना, ऊर्जा संरक्षण में ऊर्जा की खपत को कम करना, कचरा प्रबंधन में कचरे को कम करना और रिसायकल को बढ़ावा देना, ई-वेस्ट प्रबंधन में ई-वेस्ट का सही तरीके से निपटान करना, सिंगल-यूज़ प्लास्टिक का उपयोग बंद करना, प्लास्टिक के उपयोग को कम करना, स्वस्थ्य एवं सतत खाद्य प्रणाली को प्रोत्साहन देने स्वस्थ और पर्यावरण-अनुकूल खाद्य प्रणाली अपनाना, स्वस्थ जीवन-शैली अपनाने के लिए स्वस्थ जीवन-शैली को बढ़ावा देना शामिल है।मिशन लाइफ का उद्देश्य व्यक्तियों और समुदायों को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करना एवं पारंपरिक और पर्यावरण मित्र जीवन-शैली पर आधारित सांस्कृतिक मूल्य के महत्व को रेखांकित करना है।

जलवायु परिवर्तन के खतरों को रोकने के लिये क्षतिपूर्ति वनीकरण जरूरी-वन मंत्री रावत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। वन मंत्री श्री रामनिवास रावत ने कहा है कि प्रदेश में वनीकरण को प्रोत्साहित कर जलवायु परिवर्तन के खतरे को कम करने के लिये क्षतिपूर्ति वनीकरण जरूरी है। मंत्री श्री रावत आज वन भवन में कैम्पा राज्य प्रतिकारात्मक वन रोपण निधि प्रबंधन और योजना प्राधिकरण की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। मंत्री श्री रावत ने कहा कि 68 परियोजनाओं के क्षतिपूर्ति वनीकरण के लिये कार्य प्रगति पर है। मंत्री श्री रावत ने कहा कि वन संरक्षण के अंतर्गत विभिन्न विकास कार्यों के लिये वन भूमि व्यपवर्तन के प्रकरणों में आवेदक संस्था से राशियाँ प्राप्त की जाती हैं। इनमें क्षतिपूर्ति रोपण, नेट प्रजेन्ट वेल्यू, जल-ग्रहण उपचार कार्य, वन्य-प्राणी प्रबंधन कार्य, औषधि पौध-रोपण और सेफ्टी जोन जैसे कार्य शामिल हैं।

मंत्री श्री रावत ने क्षतिपूर्ति वृक्षारोपण, आवाह क्षेत्र शोधन उपचार, वन्य-प्राणी प्रबंधन कार्य के मदवार वित्तीय प्रगति की जानकारी प्राप्त की। मंत्री श्री रावत ने वर्ष 2024-25 में प्रस्तावित गतिविधियों में नवीन क्षतिपूर्ति वनीकरण की तैयारी, रोपण एवं रख-रखाव कार्य, आवाह क्षेत्र उपचार, वन्य-प्राणी संरक्षण योजना, नवीन रोपण कार्य की भी विस्तृत समीक्षा की। मंत्री श्री रावत ने बताया कि 932.55 हेक्टेयर क्षेत्र में रोपण कार्य और 29942.05 हेक्टेयर में रख-रखाव कार्य प्रगति पर है। उन्होंने कहा कि डीआरडीओ, सुलियारी एवं दूधीचुआ तीन परियोजनाओं में वन्य-प्राणी प्रबंध का कार्य वन मण्डल भोपाल, रायसेन, सिंगरौली एवं संजय टाइगर रिजर्व सीधी में किया जा रहा है। मंत्री श्री रावत ने वन्य-प्राणी रहवास क्षेत्र विकास के अंतर्गत 20 हजार 600 हेक्टेयर क्षेत्र में चारागाह विकास एवं आवास उन्नयन का कार्य किया जाना है। उन्होंने अधिकारी-कर्मचारियों के भवन निर्माण कार्य की प्रगति की जानकारी ली। मंत्री श्री रावत ने बताया कि ईको पर्यटन विकास बोर्ड द्वारा अनुभूति कार्यक्रम के अंतर्गत 944 शिविरों का आयोजन किया गया, जिसमें वन एवं पर्यावरण संरक्षण के लिये लोगों को जागरूक किया गया।

मंत्री टेटवाल ने केंपस सिलेक्शन से चयनित प्रशिक्षणार्थियों को जॉब ऑफर लेटर वितरित किये

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। कौशल विकास एवं रोजगार राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गौतम टेटवाल ने संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल्स पार्क के 7हृद्ध बैच के 70 प्रशिक्षणार्थियों को केंपस सिलेक्शन के जरिये कंपनी में सिलेक्शन होने पर जॉब ऑफर लेटर वितरित किए। मंत्री श्री टेटवाल ने प्रशिक्षणार्थियो को शुभकामनाएँ दीं और कहा कि आज मुझे इस बात की प्रसन्नता हो रही है कि यहाँ से अत्याधुनिक प्रशिक्षण प्राप्त कर युवा वर्ग प्रतिष्ठित कंपनी मे रोजगार प्राप्त कर ग्लोबल स्किल्स पार्क का नाम रोशन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुझे विश्वास है कि यहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थी और अधिक क्षमतावान बन कर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का रोजगार देने वाले बनने का सपना पूर्ण करेंगे। जीएसपी के विद्यार्थी प्रदेश, देश और विश्व में मध्यप्रदेश का नाम रोशन करेंगे। एसएसआर ग्लोबल स्किल्स पार्क भोपाल के प्रशिक्षणार्थियो के लिए आज का दिन बड़ा ही हर्षोल्लास से भरा रहा।

एसएसआर ग्लोबल स्किल्स पार्क के प्रशिक्षणार्थियो के लिए संचालित कोर्स एडवांस्ड प्रिसिजन इंजीनियरिंग% एक वर्षीय सर्टिफिकेशन कोर्स के 7 बैच के प्रशिक्षणार्थियो का आज जहाँ एक वर्षीय प्रशिक्षण पूर्ण हुआ वहीँ आज उनके हाथ में रिजल्ट आने के पहले ही उनके हाथ में कई राष्ट्रीय कंपनियों के जॉब ऑफर लेटर्स थे। ग्लोबल स्किल पार्क, मध्यप्रदेश शासन का एक प्रतिस्थठित संस्थान है, यहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त कर देश के युवा कौशलउन्मुख होकर, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कौशल भारत-कुशल भारत का सपना साकार कर रहे हैं ग्लोबल स्किल्स पार्क के सीईओ श्री राम रामालिंगम ने बताया कि इस संस्था के 97 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों का प्लेसमेंट, कोर्स की उद्योगों को मांग और इस संस्था स्किल क्षेत्र की उपयोगिता को सिद्ध करती है। उल्लेखनीय है कि इस बैच के लिए जुलाई के दूसरे सप्ताह मे प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया गया था

जिसमे कुल 11 कंपनियों जीबीएम नोएडा कोरटेक एनर्जी लि. अहमदाबाद, राघव ऐरोस्पेस मेन्युफेक्चरिंग लि. हैदराबाद, हिन्दुस्तान इक्विपमेंट प्रा. लि. इंदौर, चेतन मेडिटेक प्रा.लि. अहमदाबाद, डीएनएच सेचेरोन इलेक्ट्रोड्स प्रा. लि. इंदौर, ओमनिटेक इंजीनियरिंग प्रा. लि. राजकोट, इन्सप्रोस इंजीनियर्स मण्डीदीप भोपाल, परिधि इंडस्ट्रीज प्रा. लि. भोपाल, नागपुर इंडस्ट्रीज प्रा. लि. भोपाल, ओमेगा रेंक बियरिंग्स प्रा. लि. भोपाल ने भाग लिया।

नेशनल लोक अदालत 14 सितंबर को

नेशनल लोक अदालत के संबंध में प्रधान जिला न्यायाधीश ने की न्यायाधीशगण एवं जिला अधिवक्ता संघ के साथ बैठक

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सीधी के अध्यक्ष संजीव कुमार पाण्डेय के मार्गदर्शन में वर्ष 2024 में आयोजित होने वाली नेशनल लोक अदालतों के क्र म में वर्ष की तीसरी नेशनल लोक अदालत का आयोजन दिनांक 14 सितंबर 2024 को जिला न्यायालय सीधी तथा सिविल न्यायालय चुरहट, रामपुर नैकिन एवं मझौली में किया जायेगा। 14 सितंबर 2024 को आयोजित होने वाली नेशनल लोक अदालत में अधिक से अधिक प्रकरणों के निराकरण हेतु दिनांक 11.09.2024 दिन बुधवार को प्रधान जिला न्यायाधीश संजीव कुमार पाण्डेय की अध्यक्षता में समस्त मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण, बीमा कंपनी के अधिवक्तागण तथा आवेदक अधिवक्तागण के साथ बैठक का आयोजन किया गया।

उक्त बैठक में विशेष न्यायाधीश रमा जयंत मित्तल, अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष बृजेन्द्र सिंह, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण वीरेन्द्र जोशी, प्रथम जिला न्यायाधीश राजेश कुमार श्रीवास्तव, तृतीय जिला न्यायाधीश विकास चौहान, चतुर्थ जिला न्यायाधीश गौतम कुमार गुजरे, प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश सीधी के न्यायालय के तृतीय अतिरिक्त जिला न्यायाधीश सुउर्मिला यादव, जिला विधिक सहायता अधिकारी सिद्धार्थ शुक्ला, चीफ लीगल एड डिफेंस काउंसिल देवेन्द्र प्रसाद मिश्रा, डिप्टी चीफ लीगल एड डिफेंस काउंसिल विनोद कुमार श्रीवास्तव, डिप्टी चीफलीगल एड डिफेंस काउंसिल बाबूलाल सिंह असिस्टेंट लीगल एड डिफेंस काउंसिल देवेन्द्र प्रसाद द्विवेदी, असिस्टेंट लीगल एड डिफेंस काउंसिल सत्यप्रकाश पाण्डेय, असिस्टेंट लीगल एड डिफेंस काउंसिल ऋषभ सिंह, अधिवक्तागण राजेन्द्र सिंह परिहार, यज्ञ प्रताप सिंह, राजेन्द्र यादव, रमाशंकर केसरी, रावेन्द्र शर्मा, उत्तम सिंह चौहान, सतीश शुक्ला सहित जिला न्यायालय के कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

नेशनल लोक अदालत में न्यायालय में लंबित राजीनामा योग्य प्रकरणों एवं प्री-लिटिगेशन प्रकरणों का निराकरण किया जावेगा। लोक अदालत के माध्यम से राजीनामा योग्य आपराधिक प्रकरणों, सिविल प्रकरणों, चेक बाउंस प्रकरणों, वैवाहिक एवं पारिवारिक प्रकरणों, विद्युत अधिनियम के प्रकरणों, धन वसूली प्रकरणों आदि का निराकरण पक्षकारों की आपसी सहमति से किया जावेगा।

नेशनल लोक अदालत में विद्युत अधिनियम 2003 की धारा 135 के अंतर्गत न्यायालयों में लंबित प्रकरणों के लिए निम्नदाब श्रेणी के समस्त घरेलू, समस्त कृषि, पॉच किलो वाट तक के गैर घरेलू, 10 अश्वशक्ति भार तक के औद्योगिक उपभोक्ताओं को छूट दी जावेगी। इन प्रकरणों में प्री-लिटिगेशन स्तर पर कंपनी द्वारा आंकलित सिविल दायित्व की राशि में 30 प्रतिशत एवं आंकलित राशि के भुगतान में चूक किये जाने पर निर्धारण आदेश जारी होने की तिथि से 30 दिवस की अवधि समाप्त होने के पश्चात प्रत्येक छः माही चक्र वृद्धि दर अनुसार 16 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से लगने वाले ब्याज की राशि पर 100 प्रतिशत की छूट दी जावेगी। लिटिगेशन स्तर पर कंपनी द्वारा आंकलित सिविल दायित्व की राशि में 20 प्रतिशत एवं आंकलित राशि के भुगतान में चूक किये जाने पर निर्धारण आदेश जारी होने की तिथि से 30 दिवस की अवधि समाप्त होने के पश्चात प्रत्येक छः माही चक्रवृद्धि दर अनुसार 16 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से लगने वाले ब्याज की राशि पर 100 प्रतिशत की छूट दी जावेगी। सामान्य विद्युत देयकों के विरूद्ध बकाया राशि पर कोई छूट नहीं दी जावेगी। यह छूट मात्र नेशनल लोक अदालत 14 सितंबर 2024 में समझौता करने के लिए ही लागू रहेगी। अपराध शमन फीस, अधिनियम के प्रावधान अनुसार वसूल की जावेगी।

बेकाबू होकर पलटी तेज रफ्तार बस

12 लोग मामूली घायल, सीधी में टिकरी के पास हुआ हादसा

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी जिले के टिकरी के पास तेज बुधवार दोपहर को एक तेज रफ्तार बस अचानक बेकाबू होकर पलट गई। बस में 35 व्यक्ति सवार थे, जिनमें से 12 व्यक्तियों को मामूली चोट आई है। जिन्हें इलाज के लिए मड़वास अस्पताल में भर्ती किया गया है।

जानकारी के अनुसार कैपिटल सर्विस की यात्री बस (एमपी18पी3251) सीधी से टिकरी-मड़वास मार्ग होते हुए शहडोल जा रही थी। बस में सवार राघवेंद्र सिंह ने बताया कि दोपहर करीब 12 बजे एक फोर व्हीलर वाहन को बचाने के चक्कर में बस बेकाबू होकर पलट गई। हादसे में 12 लोगों को मामूली चोट आई है।

टिकरी चेक पोस्ट के प्रभारी एसआई पुष्पेंद्र सिंह ने बताया कि घटना की सूचना मिलते ही मैं पुलिस कर्मियों के साथ घटनास्थल पर पहुंचा था। जहां से सभी घायलों को डायल 100 और अन्य वाहनों के माध्यम से मड़वास अस्पताल में भर्ती किया गया है। सभी को मामूली चोट आई है।

सोन नदी घाट का निरीक्षण करने पहुंचे अधिकारी

गणेश प्रतिमाओं के विसर्जन को लेकर देखी सुरक्षा संबंधी व्यवस्था

मीडिया ऑडीटर, शहडोल निप्र। शहडोल जिला प्रशासन के अधिकारियों ने बुधवार को गणेश विसर्जन स्थल दियापीपर सोन नदी घाट का निरीक्षण किया। अधिकारियों ने मौके पर गणेश प्रतिमा पहुंच मार्ग को देखा और दियापीपर घाट में व्यवस्था को लेकर कर आवश्यक निर्देश दिए।

बुधवार को पुलिस महानिरीक्षक शहडोल जोन अनुराग शर्मा, कलेक्टर डॉ. केदार सिंह और पुलिस अधीक्षक कुमार प्रतीक ने निरीक्षण के दौरान निर्देश दिए कि श्रद्धालुओं के लिए आने जाने के लिए मार्ग का समतलीकरण का कार्य किया जाए।

कलेक्टर ने नदी घाट में विसर्जन स्थल पर समुचित लाइटिंग, वाहन पार्किंग, घाट में बैरिकेडिंग, रस्सी, गोताखोर जैसी अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित कराने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। इस दौरान अनुविभागीय अधिकारी राजस्व अरविंद शाह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अभिषेक दीवान, तहसीलदार दिव्या मरावी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

ट्रेन छोड़ सड़कों पर उतरे ट्रेन मैनेजर

लाइन बॉक्स बंद होने के विरोध में किया धरना प्रदर्शन, रेल अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

मीडिया ऑडीटर, शहडोल निप्र। ऑल इंडिया गार्ड काउंसिल के आह्वान पर ट्रेन मैनेजरों ने बुधवार को एक दिवसीय धरना प्रदर्शन शहडोल रेलवे परिसर में किया। इस दौरान रेलवे परिसर में एक रैली भी निकाली गई। विरोध प्रदर्शन रेलवे बोर्ड की ओर से गार्ड लाइन बॉक्स बंद किए जाने के विरोध में किया गया।

इस संबंध में गार्ड काउंसिल के शाखा सचिव अनुज विश्वकर्मा ने बताया केंद्रीय गार्ड काउंसिल के निर्देशन में पूरे देश में बुधवार के दिन धरना प्रदर्शन कर विरोध जताया जा रहा है। रेलवे बोर्ड गार्ड का लाइन बॉक्स बंद कर ट्रॉली बैग मुहैया कराना चाहता है।

सभी उपकरण ट्रेन मैनेजर को ही अपने साथ वहन कर कार्य में ले जाना होता है। जिसका विरोध किया जा रहा है। धरना प्रदर्शन के बाद सहायक क्षेत्रीय रेल प्रबंधक शहडोल को ट्रेन मैनेजरों ने ज्ञापन भी सौपा। धरना विरोध प्रदर्शन मे मुख्यालय में मौजूद ट्रेन मैनेजरों ने हिस्सा लिया।

एल्बेंडाजोल खाने से 13 और स्टूडेंट्स की तबीयत बिगड़ी

अधिकारियों ने अस्पताल में भर्ती कराया, एक दिन पहले 50 बच्चियों बीमार हुईं थीं

मीडिया ऑडीटर, सीधी। सीधी जिले के अंतर्गत कमला पब्लिक स्कूल गांधी ग्राम के 13 और स्टूडेंट्स की तबीयत अचानक बुधवार को बिगड़ गई। सभी को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बच्चों की हालत खराब होने पर तत्काल प्रशासन की टीम स्कूल पहुंची और बच्चों को इलाज के लिए अस्पताल लाई है।

एक दिन पहले भी 50 बच्चियों की तबीयत एल्बेंडाजोल टेबलेट खाने की वजह से खराब हुई थी। इसके बाद बुधवार को फिर से गांधीग्राम के स्कूल के 13 बच्चों की तबीयत खराब हुई है। बच्चों के पेट-पैर और कमर दर्द है। साथ ही चक्कर आने की शिकायत भी है।

छात्रा के परिजन रामरति यादव ने बताया कि मंगलवार के दिन मेरी बेटी को एल्बेंडाजोल की टैबलेट खिलाई थी। लेकिन उसकी तबीयत आज अचानक दोपहर करीब 1 बजे खराब हो गई। जिसे हम लोगों ने जिला अस्पताल में भर्ती कर दिया है।

डॉ. नागेंद्र बिहारी दुबे ने बताया कि कुछ बच्चियों की तबीयत डर की वजह से खराब हुई है। क्योंकि कल के केस के बाद मीडिया में बात फैल गई थी। जिसकी वजह से वह चिंतित हैं और कुछ सिम्टम्स उन्हें आए हैं। जिसकी वजह से अब हम पूरे मामले की जांच कर रहे हैं। फिलहाल सभी की हालत स्थिर बताई जा रही है।

जिला अस्पताल परिसर में नहाने की पर्याप्त सुविधा नहीं

बाथरूम में गंदगी होने की वजह से खुले में नहाने को मजबूर है महिलाएं

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर निप्र। जिला अस्पताल अनूपपुर में नहाने की व्यवस्था नहीं है। इस वजह से महिलाएं खुले में जिला अस्पताल के मुख्य गेट के सामने ही नहा रहीं है। जिला अस्पताल में मौजूद बाथरूम में गंदगी होने के कारण महिलाएं खुले में नहाने को मजबूर है। जिला अस्पताल परिसर नहाने और कपड़े धोने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है।

बाथरुम में गंदगी का ढेर लगा हुआ है: जिला अस्पताल में मौजूद बाथरूम में गंदगी का ढेर लगा हुआ हैं। बाथरूम के दरवाजे टूटे हुए हैं। उसके अंदर से बदबू आती हैं। बाथरूम की संख्या कम होने की वजह से भीड़ भी बढ़ती हैं। जिसकी वजह से महिलाएं खुले में नहाती है।

महिलाएं मुख्य गेट के सामने ही नहाती हैं। मरीजों और परिजनों का आना-जाना मुख्य गेट के सामने से होता हैं। जिला अस्पताल में मौजूद गार्ड भी मुख्य गेट के सामने बैठे रहते हैं, लेकिन महिलाओं को नहाने से कोई भी रोकता नहीं हैं। महिला और बच्चों के कपड़े भी जिला अस्पताल परिसर में यहां-वहां सूखते रहते है।

वहीं इस पूरे मामले पर सिविल सर्जन का कहना है कि जिला अस्पताल में 10 से अधिक बाथरूम हैं। महिलाएं जिला अस्पताल के बाहर अपने शौक से नहाती हैं। हमारे यहां बाथरूम की कमी नहीं है।

महिला पटवारी से छेड़छाड़ का मामला दर्ज

कई महीनों से पीछे पड़ा था युवक, भेजता था अश्लील मैसेज

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली निप्र। सिंगरौली जिले में एक महिला पटवारी के साथ छेड़छाड़ करने का मामला सामने आया है। शिकायत के बाद पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पूरा मामला मंगलवार देर शाम का है, जब महिला ने अपने संगठन के कुछ लोगों के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई।

खुटार में पदस्थ महिला पटवारी ने शाम बैढ़न थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज करवाई की हरदी कुसम्हारा गांव का रहने वाला पुष्पेंद्र पांडे उनके साथ पिछले कई महीनों से छेड़छाड़ कर रहा है। इसके अलावा उनके सोशल मीडिया अकाउंट वॉट्सऐप पर अश्लील मैसेज भी कर रहा था। जब आरोपी युवक कि हरकतें बर्दाश्त से बहार हो गईं तब उसने मंगलवार को थाने पहुंचकर आरोपी के खिलाफ शिकायत दर्ज करा दी।

सिंगरौली जिला पुलिस अधीक्षक निवेदिता गुप्ता ने बताया कि जैसे ही बैढन थाने पुलिस को इस बात की सूचना मिली वैसे ही कार्यवाही शुरू कर दी और आरोपी युवक को गिरफ्तार भी कर लिया गया है।

आकाशीय बिजली गिरने से पति-पत्नी की मौत, खेत में चारा काटने के दौरान हुआ हादसा

मीडिया ऑडीटर, पन्ना निप्र। पन्ना में मंगलवार से मौसम में एक बार परिवर्तन हुआ है। दिनभर जिले के अलग-अलग हिस्सों में रुक रुक कर बूंदाबांदी और तेज बारिश का सिलसिला चलता रहा। इसी दौरान रैपुरा थाना क्षेत्र अंतर्गत सगौनी गांव में शाम के समय अचानक आकाशीय बिजली गिरी। जिसकी चपेट में आने से पति पत्नी की दर्दनाक मौत हो गई। बताया जा रहा है दोनों खेत में मवेशियों के लिए चारा काट रहे थे और तभी ये हादसा हो गया।

जानकारी के अनुसार 10 सितंबर की देर शाम ग्राम सगौनी निवासी भगोना पिता दरवारी आदिवासी (62) व पत्नी हल्की बाई पति भगोना आदिवासी (61) अपने खेत मे मवेशियों के लिए चारा काट रहे थे लेकिन देर शाम जब वह चारा काटकर घर आने लगे तो अचानक बादलों की गड़गड़ाहट शुरू हो गई। जिससे दोनों खेत मे ही रुक गए।

इसी दौरान अचानक बिजली गिरी और दोनों बिजली की चपेट में आ गए। मौके पर ही दोनों की मौत हो गई। सूचना मिलने के बाद देर रात्रि रैपुरा थाना पुलिस मौके पहुंची। दोनों के शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया। वहीं पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया है और मामले की जांच की जा रही है।

जनपद सदस्य-सरपंच का उपचुनाव

अनूपपुर के 9 केंद्रों पर 46.36 प्रतिशत मतदान, बोदा में 3 सेंटर पर 70.07 वोटिंग हुई

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर निप्र। अनूपपुर में पंचायत उप निर्वाचन का मतदान बुधवार को संपन्न हुआ। जनपद पंचायत अनूपपुर के वार्ड 14 (ग्राम पंचायत निमहा, पयारी नं. 2 और सोहीबेलहा) में जनपद सदस्य के लिए 9 मतदान केन्द्र बनाए गए। वहीं जनपद पंचायत पुष्पराजगढ़ के ग्राम पंचायत बोदा में सरपंच पद के लिए 3 मतदान केंद्र बनाए गए थे।

जिले में जनपद पंचायत अनूपपुर के वार्ड 14 के सदस्य पद के लिए और जनपद पंचायत पुष्पराजगढ़ के ग्राम पंचायत बोदा में सरपंच पद के लिए मतदान सम्पन्न हुआ है। मतदान में हर वर्ग के मतदाताओं ने वोट डाला है।

जनपद पंचायत अनूपपुर के जनपद सदस्य निर्वाचन के लिए बनाए गए 9 मतदान केन्द्रों में 46.36 प्रतिशत मतदान हुआ। वहां जनपद पंचायत पुष्पराजगढ़ के ग्राम पंचायत बोदा में सरपंच पद के निर्वाचन के लिए बनाए गए 3 मतदान केन्द्रों में 70.07 प्रतिशत मतदान हुआ है।

सेक्टर मजिस्ट्रेट और पुलिस अधिकारियों की निगरानी से निर्वाचन क्षेत्रों में चौकस व्यवस्थाओं से निर्वाचन शांतिपूर्ण रहा। इसके कारण पंचायत उप निर्वाचन में मतदाताओं में उत्साह देखा गया।

20 घंटे से हो रही बारिश

कई इलाकों में बाढ़ जैसे हालात, एसडीआरएफ की टीम लोगों के रेस्क्यू में लगी

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। जिले में पिछले 20 घंटों से लगातार से तेज बारिश हो रही है। जिसके चलते बाणसुजारा के 12 गेट खोल दिए गए हैं और 2500 क्यूमैक्स पानी छोड़ा गया है। जिसके कारण कई इलाकों में लोग नदियों के टापुओं पर फंस गए हैं। उनके रेस्क्यू के लिए एसडीआरएफ की टीम लगी हुई है। बुधवार की सुबह तक जिले में 6776.7 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई है।

नदी के तेज बहाव में फंसे 5 लोग: ईशानगर थाना के ग्राम सलैया के पास धसान नदी के बहाव में 5 लोग फंस गए। जानकारी के मुताबिक सुबह दो व्यक्ति मछली पकड़ने के लिए गए थे, जिन्हें बचाने की कोशिश में 3 और लोग फंस गए थे। हालांकि, जिला प्रशासन की टीम ने मौके पर पहुंचकर सभी को सुरक्षित बाहर निकाल लिया है।

बकस्वाहा जनपद के बम्हौरी ग्राम पंचायत में बाढ़ के हालात देखने को मिल रहे हैं। यहां शाहगंज रोड पर डॉ. खरे की पुलिया के पास भारी बारिश के कारण हुए जलजमाव से करीब एक दर्जन घरों का जनजीवन प्रभावित हो गया है। जहां से पुलिस प्रशासन और एसडीआरएफ की टीम के ने बाढ़ में फंसे लगभग 50 लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला है। साथ ही लोगों के खाने-पीने, रुकने की व्यवस्था बम्होरी के विद्यालय की गई है।

थाना बड़ामलहरा क्षेत्र की सुक्कू नदी के टापू पर बाढ़ में फंसे युवक मुकेश यादव निवासी ग्राम धनगंवा को संयुक्त बचाव टीम ने सुरक्षित बाहर निकाला।

4 पंचायतों में चुनाव

7 बजे से शुरू हुआ मतदान, केंद्रों पर पहुंच रहे वोटर्स

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। छतरपुर जिले की जनपद पंचायत नौगांव की ग्राम पंचायत खिरवा, जनपद पंचायत बिजावर की ग्राम पंचायत खरयानी में सरपंच पद के लिए, ग्राम पंचायत अमरौनिया में पंच पद के लिए और जनपद पंचायत बक्सवाहा की ग्राम पंचायत निवार के सरपंच पद के लिए आज बुधवार को मतदान किया जा रहा है।

सुबह 7 बजे से मतदान की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। मतदान शाम 3 बजे तक चलेगा। वहीं वोटों की 15 सितंबर को जनपद स्तर पर गिनती की जाएगी। उसके बाद मतदान के परिणाम की घोषणा की जाएगी।

म.प्र. सामान्य प्रशासन विभाग मंत्रालय वल्लभ भवन भोपाल से जारी अधिसूचना के अनुसार कलेक्टर व जिला निर्वाचन अधिकारी ने संबंधित जनपद पंचायतों के निर्वाचन क्षेत्रों में बुधवार को सार्वजनिक अवकाश घोषित किया है।

संपादकीय

घुटती सांसों से कम होती औसत आयु की चिन्ता

वायु प्रदूषण का संकट भारत की राष्ट्रव्यापी समस्या है। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो की हाल ही में जारी रिपोर्ट इस चिन्ता को बढ़ाती है जिसमें कहा गया कि वायु प्रदूषण के चलते भारत में जीवन प्रत्याशा में गिरावट आ रही है। जिसमें फेफड़ों को नुकसान पहुंचाने वाले पी.एम. 2.5 कण की बड़ी भूमिका है। रिपोर्ट बताती है कि वैश्विक मानकों से कहीं अधिक प्रदूषण भारत में लोगों की औसत आयु तीन से पांच वर्ष एवं दिल्ली में दस से बाहर वर्ष कम कर रहा है। बहरहाल प्रदूषण के खिलाफ योजनाबद्ध ढंग से मुहिम छेड़ने की जरूरत है। अध्ययन कहता है कि देश की एक अरब से अधिक आबादी ऐसी जगहों पर रहती है जहां प्रदूषण डब्ल्यूएचओ के मानकों से कहीं अधिक है। दरअसल, देश के बड़े शहर आबादी के बोझ से त्रस्त हैं। बढ़ती आबादी के लिये रोजगार बढ़ाने व अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए जो औद्योगिक इकाइयां लगायी गई, उनकी भी प्रदूषण बढ़ाने में भूमिका रही है। डीजल-पेट्रोल के निजी वाहनों को बढ़ता काफिला, निर्माण कार्यों में लापरवाही, कचरे का निस्तारण न होना और जीवाश्म ईंधन ने प्रदूषण बढ़ाया है। यह बढता वायु प्रदूषण हमारी जीवन शैली से उपजे प्रदूषण की देन भी है। यह निराशाजनक खबरों के बीच उत्साहवर्धक खबर यह भी है कि भारत में सूक्ष्म कणों से पैदा होने वाले जानलेवा प्रदूषण में गिरावट आई है। लेकिन अभी जीवन प्रत्याशा घटाने वाले प्रदूषण को लेकर जारी लड़ाई खत्म नहीं हुई है। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो के एनर्जी पॉलिसी इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट 'वायु गुणवत्ता जीवन सूचकांक-2024' बताती है कि भारत में साल 2021 की तुलना में 2022 के वायु प्रदूषण में 19.3 फीसदी की कमी आई है। हालांकि, यह उपलब्धि मौजूदा हालात में बहुत बड़ी तो नहीं कही जा सकती है, लेकिन यह बात उत्साहवर्धक है कि प्रत्येक भारतीय की जीवन प्रत्याशा में इक्यावन दिन की वृद्धि हुई है। हालांकि, हम अभी विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों की कसौटी पर खरे नहीं उतरे हैं, लेकिन एक विश्वास जगा है कि युद्ध स्तर पर प्रयासों से भयावह प्रदूषण के खिलाफ किसी हद तक जंग जीती भी जा सकती है। लेकिन इसके साथ ही सूचकांक-2024 में यह चेताया भी है कि यदि भारत में डब्ल्यूएचओ के वार्षिक पीएम 2.5 के सांद्रता मानक के लक्ष्य पूरे नहीं होते तो भारतीयों की जीवन प्रत्याशा में करीब साढ़े तीन साल की कमी आने की आशंका पैदा हो सकती है।

कश्मीरी की सोच बताएंगे विधानसभा चुनाव

अशोक मधुप

जमू-कश्मीर विधानसभा लिए 18 सितंबर से एक अटूबर 2024 तक तीन चरणों में चुनाव होने हैं। नतीजे आठ अटूबर 2024 को घोषित किए जाएंगे। इन चुनाव के परिणाम बताएंगे कि कश्मीर की जनता या चाहती है। आर्टिकल 370 हटने के बाद जमूक्कश्मीर में बडी तादाद में विकास हुआ। शांति लौटी। रोज की होने वाली पत्थरबाजी से जमू-कश्मीर की मुक्ति मिली। सिनेमा हाल खुल गए। पर्यटक आने लगे। मुहर्रम के जुलूस निकलने लगे। कश्मीर में बहुत कुछ बदल गया है, इसके बावजूद देखना यह है कि कश्मीर का मतदाता या इस विकास को पसंद करता है,या उसे मजहबी कट्टरता ही मंजूर है।

जम्मू-कश्मीर में कुल 114 विधानसभा सीटें हैं लेकिन राज्य में विधानसभा सीटों के डिलिमिटेशन के बाद चुनाव केवल 90 सीटों पर ही होंगे। इसकी भी वजह है कि 24 सीटें पीओके यानि पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के लिए हैं। राजनीतिक और प्रशासनिक परिवर्तनों के कारण इनमें से केवल 90 सीटों के लिए चुनाव होना तय है। वर्ष 2019 में जब जम्मू और कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम 2019 के जरिए जब आर्टिकल 370 को हटाया गया तो राज्य में चुनावी सीटों की सीमाओं को फिर से निर्धारित करने के लिए परिसीमन प्रक्रिया शुरू की। मार्च 2020 में एक परिसीमन आयोग की स्थापना की गई। इसकी अंतिम रिपोर्ट मई 2022 में जारी की गई। इस रिपोर्ट ने विधानसभा सीटों की संख्या 107 से बढ़ाकर 114 कर दी। इसमें छह सीटें जम्मू और एक कश्मीर में बढ़ी है।114 सीटों में 24 सीटें पाकिस्तान प्रशासित कश्मीर के क्षेत्रों के लिए आरक्षित हैं, इसका अर्थ है कि उन पर चुनाव नहीं लड़ा जा सकता है, इसलिए, चुनाव के लिए उपलब्ध सीटों की प्रभावी संख्या 90 है, जम्मू संभाग में 43 और कश्मीर संभाग में 47, राज्य का विशेष दर्जा खत्म होने के बाद यहां पहली बार विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं। राज्य में पिछले विधानसभा चुनाव दस साल पहले नवंबर-दिसंबर 2014 में हुए थे। चुनाव के बाद जम्मू और कश्मीर पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के गठबंधन ने राज्य सरकार बनाई। इसमें मुफ्ती मोहम्मद सईद मुख्यमंत्री बने। मुख्यमंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद का सात जनवरी 2016 को निधन हो गया। राज्यपाल शासन लगा पर कम समय के लिए लगा। फिर महबूबा मुफ्ती ने वहां मुख्यमंत्री पद के लिए रूप में शपथ ली। पिछली राज्य सरकार से जून 2018 में भाजपा ने पीडीपी के नेतृत्व वाली सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया। इसके बाद जम्मू-कश्मीर में राज्यपाल शासन लागू हो गया। नवंबर 2018 में, जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने राज्य विधानसभा भंग कर दी। 20 दिसंबर 2018 को राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया। भाजपा की ओर से हाल ही में केंद्रीय गृह मंत्री और पार्टी के वरिष्ठ नेता अमित शाह ने जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के लिए पार्टी घोषणापत्र जारी किया। इसमें आतंकवाद के सफाए और हिंदू मंदिरों और धार्मिक स्थलों के पुनर्निर्माण से लेकर कश्मीरी पंडितों की सुरक्षित वापसी और पुनर्वास तक, भाजपा ने कई प्रमुख वादे किए हैं। अमित शाह ने कहा कि यह क्षेत्र में विकास, सुरक्षा और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए पार्टी के वादों और योजनाओं के अनुरूप है। नए जम्मू और कश्मीर के लिए 25 वादों में से, भाजपा ने जम्मू और कश्मीर को राष्ट्र के विकास और प्रगति में अग्रणी बनाने के लिए आतंकवाद और अलगाववाद को खत्म करने की कसम खाई। कांग्रेस-नेशनल कॉन्फ्रेंस गठबंधन ने जम्मू-कश्मीर को फिर से राज्य का दर्जा देने और अनुच्छेद 370 को हटाने से पहले की राजनीतिक स्थिति बहाल करने का भी वादा किया है। इस बीच नेशनल कॉन्फ्रेंस ने शंकराचार्य पहाड़ी का नाम बदलकर तख्त-ए-सुलेमान और हरि पर्वत का नाम बदलकर कोह-ए-मरान करने की बात कही है। इसे कश्मीर की मुस्लिम बहुल आबादी की भावनाओं को भुनाने की कोशिश के तौर पर देखा जा रहा है। जम्मू-कश्मीर के चुनाव के विभिन्न दलों के स्थानीय नेता तो चुनाव प्रचार में उतर ही चुके हैं। बड़ी पार्टियों के राष्ट्रीय नेताओं की भी सभाएं शुरू हो गई हैं। जनसंपर्क अभियान चल रहा है। रोड शो निकाले जा रहे हैं। घर-घर जाकर नेता लोगों से वोट मांग रहे हैं। इस बार का विधानसभा चुनाव इस मायने में भी महत्वपूर्ण है कि कश्मीर घाटी में परिवारवादी दलों के दिन अब खत्म नजर आ रहे हैं। पिछले पांच वर्षों में जम्मू-कश्मीर के बुनियादी ढांचे का इस तरह विकास किया गया है कि पिछले दिनों श्रीनगर में जी-20 देशों की बैठक शांतिपूर्वक संपन्न हुई। इस साल अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर मुख्य कार्यक्रम भी श्रीनगर में ही आयोजित किया गया। इसमें स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भाग लिया। हालात तो ये बता रहे हैं कि कश्मीर बदल रहा है किंतु जम्मू-कश्मीर की बारामुला सीट लोकसभा सीट से आतंकवादियों को फंडिग करने के आरोप में जेल में बंद निर्दलीय उम्मीदवार अब्दुल रशीद शेख़ की जीत कुछ और ही इशारा कर रही है। उन्होंने जेल में रहते हुए जम्मू कश्मीर नेशनल कॉन्फ़्रेंस उमर अब्दुल्ला को दो लाख से भी ज़्यादा वोटों से शिकस्त दी है। बारामुला सीट पर रशीद को चार लाख 72 हज़ार वोट मिले जबकि उमर अब्दुल्ला को दो लाख 68 हज़ार वोट मिले। तीसरे स्थान पर रहे जम्मू-कश्मीर पीपल्स कॉन्फ़्रेंस के सज्जाद लोन। उन्हें एक लाख 73 हज़ार वोट मिले। अब्दुल रशीद शेख़ के स्थानीय समर्थक अब्दुल माजिद इस जीत पर बीबीसी से कहते हैं कि साल 2019 के बाद जो कुछ भी कश्मीर में हुआ, इंजीनियर रशीद की जीत उसी बात का जवाब है। उनका कहना था कि कश्मीर के युवाओं ने जिस तरह इंजीनियर रशीद का समर्थन किया है, वो इस बात को दर्शाता है कि नई पीढ़ी नए चेहरों को ढूंढ रही है और पारंपरिक राजनीति से तंग आ चुकी हैं। इंजीनियर रशीद को %आतंकवाद की फ़ंडिंग% के आरोप में यूएपीए के तहत साल 2019 में गिरफ़्तार किया गया था और इस समय वो दिल्ली के तिहाड़ जेल में बंद हैं। रशीद अवामी इत्तेहाद पार्टी के संस्थापकों में से एक हैं1 2019 में भी उन्होंने बारामूला से पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ा था और तीसरे नंबर पर रहे थे। इस बार उन्होंने बतौर स्वतंत्र उम्मीदवार चुनाव लड़ा था। जेल जाने से पहले इंजीनियर रशीद शांतिपूर्ण तरीक़े से कश्मीर समस्या को हल करने की वकालत करते रहे हैं। इंजीनियर रशीद जम्मू कश्मीर से संविधान के अनुच्छेद 370 को हटाने के सख़्त ख़िलाफ़ थे और इस मुद्दे को लेकर वह सड़कों पर भी उतरे थे। उन्होंने इसके विरोध में कई धरने भी दिए हैं। सरकार का दावा है कि 370 हटाने के बाद कश्मीर विकास कि राह पर आगे बढ़ रहा है और जम्मू-कश्मीर के उप-राज्यपाल मनोज सिन्हा भी बार-बार %नए कश्मीर% की बात कर रहे हैं। लेकिन कश्मीर में कुछ लोग इसे %जबरन ख़ामोशी% भी कहते हैं। उनका आरोप है कि किसी को खुलकर बात करने नहीं दी जाती है। इंजीनियर रशीद को चुनाव प्रचार के लिए जमानत मिल गई है। देखिए क्या होता है। अमेरिका और मित्र देशों ने 20 साल अफगानिस्तान को विकास की मुख्यधारा में लाने के लिए जमकर निवेश किया था, किंतु एक झटके में वह इस्लाम के रास्ते पर चला गया। यही डर है। अभी तो कश्मीर में फौज है। देखना यह है कि बिना फौज के भी कश्मीर का रूख ये ही रहता है, या वह फिर पुराने आतंकवाद के रास्ते पर लौटता है। हालांकि हम भारतीय आशावादी है। आशा करते हैं कि सब ठीक होगा। कश्मीरी नागरिक और युवा नए कश्मीर, विकसित कश्मीर को स्वीकार कर विकास का रास्ता अपनाएगें।

जम्मू-कश्मीर पर रक्षामंत्री का दूरगामी सन्देश

ललित गर्ग

जम्मू-कश्मीर में चुनाव प्रचार को एक नई करवट देते हुए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ऐसी बातें कहीं है जो घाटी के लोगों के दिलों को छूने वाली होने के साथ प्रांत में नई उम्मीदों के नये दौर का आगाज है एवं गुलाम कश्मीर के लोगों के प्रति सहानुभूति एवं आत्मीयता दर्शाने वाली है। एक दिन पहले करगिल युद्ध को लेकर पाकिस्तान के आर्मी चीफ जनरल आसिम मुनीर ने वो बात कुबूल कर ली, जो अब तक सारे पाकिस्तानी जनरल पूरी दुनिया से छिपाते रहे। आसिम मुनीर ने साफ-साफ कहा कि कारगिल जंग में पाकिस्तानी सेना का हाथ था। उनके सैनिकों ने शहादत दी है। इसके अगले ही दिन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का जम्मू-कश्मीर की धरती से ये ऐलान कि अगर पाकिस्तान आतंक छोड़ दे तो उसके साथ बातचीत हो सकती है। यह बयान बहुत कुछ कहता है एवं इसके कई दूरगामी राजनीतिक दृष्टिकोण है। पाकिस्तान समझ चुका है कि कश्मीर में अब उसका कुछ नहीं बचा। रही सही कसर, जम्मू-कश्मीर में हो रहे चुनावों में लोगों की जोरदार भागीदारी ने पूरी कर दी। उसकी सारी उम्मीदों पर पानी फिरता दिख रहा है, ऐसे में वह हकीकत स्वीकार करता नजर आ रहा है। रक्षामंत्री की कही बातों में पाकिस्तान सरकार को सीधा सन्देश दिया गया है। निश्चित ही राजनाथ सिंह के बयान एक अनुभवी एवं कद्दावर नेता के रणनीतिक एवं दूरगामी सोच से जुड़े बयान है, जिनकी प्रतिक्रिया दोनों ही देशों में होने के साथ ही चुनाव में हिस्सेदारी कर रहे राजनीतिक दलों में सुगबुगाहट का बड़ा कारण बना है। कश्मीर में विकास, पर्यटन में भारी वृद्धि, शांति एवं सौहार्द का वातावरण बनना गुलाम कश्मीर के लोगों को प्रेरित कर रही हैं कि उन्हें भी इस ओर आजाद फिजा में सांस लेने का मौका मिले। ऐसे में रक्षामंत्री ने उन्हें भारत का हिस्सा बनने का निमंत्रण देकर पड़ोसी देश की दुखती रग को छेड़ दिया है एवं पाकिस्तान की नींद उड़ा दी है, बल्कि गुलाम कश्मीर के लोगों में भी नया विश्वास एवं मनोबल जगा दिया है। रक्षामंत्री का यह निमंत्रण बहुत मायने रखता है, इससे पहले गृहमंत्री अमित शाह ने भी कहा था कि गुलाम कश्मीर हमारा है एवं हम इसे लेकर रहेंगे। गुलाम कश्मीर के लोग भारत से मिलने के लिये उत्सुक है, आन्दोलनरत है। क्योंकि पाकिस्तानी शासक उन्हें विदेशियों की तरह देखते हैं। यह एक सच्चाई भी है। पाकिस्तान अपने कब्जे वाले कश्मीर के लोगों का जैसा दमन और शोषण कर रहा है, उसके कई प्रमाण सामने आ चुके हैं। इसी दमन और शोषण के चलते जब-तब वहां पाकिस्तान के खिलाफ सड़कों पर उतरकर लोग भारत जाने की अनुमति भी मांगते रहते हैं। गुलाम कश्मीर में आंदोलन का नेतृत्व कर रहे लोगों को मारा जा रहा है। वहां के लोग यह अच्छी तरह देख रहे हैं कि भारतीय भूभाग में किस तरह तेजी से विकास हो रहा है और उन्हें किस तरह पाकिस्तान की ओर से ठगा जाता रहा है। कहना कठिन है कि रक्षा मंत्री के बयान पर पाकिस्तान क्या कहता है, लेकिन इसके आसार कम ही हैं कि वह आतंकवाद को सहयोग-समर्थन देने से बाज आएगा। पाकिस्तान की दमनकारी नीतियों के खिलाफ आंदोलन कर रहे इस चुनाव पर सिर्फ भारतीयों नहीं, पूरी दुनिया की नजर है। विधानसभा चुनाव की सरगर्मियों के बीच राजनाथ सिंह ने कहा कि हम गुलाम कश्मीर पर अपना दावा कभी नही छोड़ेंगे। वैसे भी गुलाम कश्मीर के लोग हमारे ही

लोग है, उन्हें पाकिस्तान ने कभी अपना माना ही नहीं है। राजनाथ सिंह का गुलाम कश्मीर के लोगों को संदेश पाकिस्तान के ताबूत में आखिरी कील की तरह है। रक्षा मंत्री ने अपने वक्तव्य के जरिये चुनाव के परिदृश्यों को एक नया मोड़ दिया है। उन्होंने नेशनल कॉन्फ्रेंस, पीडीपी और कांग्रेस को भी निशाने पर लिया। उनके लिए ऐसा करना इसलिए आवश्यक हो गया था, क्योंकि नेशनल कॉन्फ्रेंस और पीडीपी के नेता पाकिस्तानपरस्ती का परिचय देते हुए उससे बात करने पर जोर दे रहे हैं, लेकिन ऐसा करते हुए वे यह रेखांकित नहीं करते कि वार्ता के लिए उसे आतंकवाद पर लगाम लगानी होगी। नेशनल कॉन्फ्रेंस और पीडीपी कश्मीर के लोगों को अनुच्छेद-370 की वापसी का भी सपना दिखा रहे हैं। यह दिवास्वप्न के अलावा और कुछ नहीं, क्योंकि अब इस विभाजनकारी और अलगाववाद को बढ़ावा देने वाले अनुच्छेद की वापसी संभव नहीं और इसीलिए रामबन में राजनाथ सिंह ने कहा, भाजपा ने डंके की चोट पर अनुच्छेद 370 हटाकर जम्मू-कश्मीर में शांति और समृद्धि का रास्ता बनाया है। किसी माई के लाल में हिम्मत नहीं कि वह इस अनुच्छेद को वापस ला सके। ऐसा कहते हुए उन्होंने कांग्रेस को भी निशाने पर लिया, जो कि नेशनल कॉन्फ्रेंस के साथ मिलकर चुनाव लड़ रही है और अनुच्छेद-370 की वापसी के उसके वादे पर मौन धारण किए हुए है। पाकिस्तान एवं घाटी के विभिन्न राजनीतिक दल बार-बार अनुच्छेद 370 का जिक्र कर दुनिया के सामने यह गीत गाते रहे हैं कि 370 हटने से कश्मीर के लोग नाराज हैं। इस झूठ को खुलासा स्वयं कश्मीर की जनता ने लोकसभा चुनाव में वोटिंग के जरिये किया है। घाटी में चुनाव में हिस्सेदारी कर रहे हैं राजनीतिक दल पाकिस्तानी राग अलापते रहे हैं। उमर अब्दुल्ला इस वक्त अफ़ज़ल को दी गयी फांसी के विवाद में घिर चुके हैं। उन्होंने कह दिया कि अफ़ज़ल को फाँसी देना गलत था। चूँकि अफ़ज़ल संसद पर हमले का ज़िम्मेदार था, उसकी तरफदारी करके नेशनल कान्फ्रेंस स्पष्ट रूप से जता रही है कि वह आतंकवादियों से मिली हुई है या उनकी तरफ़दारी कर रही है और कांग्रेस उसकी साथी है। इन स्थितियों में कांग्रेस को यह स्पष्ट करना चाहिए कि क्या वह नेशनल कॉन्फ्रेंस के घोषणापत्र में किए गए वादों से सहमत है? उसे यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि क्या वह उमर अब्दुल्ला के इस आकलन से सहमत है कि संसद पर हमले की साजिश रचने वाले अफजल गुरु को फांसी की सजा देने से कुछ हासिल नहीं हुआ? यह अलगाववाद और आतंकवाद के दौर की वापसी के समर्थकों की हमदर्दी हासिल करने वाला ही बयान है और इसीलिए राजनाथ सिंह ने उन पर कटाक्ष किया कि अफजल को फांसी न दी जाती तो क्या उसके गले में हार डाले जाते।

15 मिनट में 5 करोड़ का सोना लूटा

ज्वेलरी-शॉप से 8 किलो गहने लेकर झारखंड की ओर भागे बदमाश

मीडिया ऑडीटर, बलरामपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बलरामपुर-रामानुजगंज जिले में 5 करोड़ रुपए के सोने की लूट हो गई। बुधवार को ज्वेलरी शॉप में दिनदहाड़े बदमाशों ने संचालक पर कट्टे की बट से हमला किया। इसके बाद गोली मारने की धमकी देकर 8 किलो सोना लूट लिया। वारदात के बाद बदमाश बाइक में सवार होकर झारखंड की ओर भाग निकले।

जानकारी के मुताबिक, रामानुजगंज नगर पालिका चौक में राजेश ज्वेलर्स नाम से दुकान है। दोपहर 1.50 बजे बाइक में सवार होकर तीन युवक पहुंचे थे। दुकान अंदर घुसकर उन्होंने कट्टा निकाल लिया और संचालक राजेश सोनी सहित कर्मचारियों को कब्जे में लिया था।

15 मिनट में वारदात को अंजाम: बदमाशों ने कट्टे की बट से राजेश सोनी पर हमला किया और दुकान सहित लॉकर मे रखे सोने के जेवरात निकलवाए। इसके बाद सभी जेवरात को बैग में डालकर बदमाश बाइक से फरार हो गए। लुटेरों ने पास ही एक मोची की दुकान के सामने बाइक खड़ी की थी। 15 मिनट के अंदर उन्होंने पूरी वारदात को अंजाम दिया।

झारखंड पहुंचे बलरामपुर एसपी: लुटेरों के भागने के बाद संचालक और कर्मचारियों ने शोर मचाया तो आसपास के लोग मौके पर पहुंचे। इसके बाद पुलिस को भी इसकी सूचना दी गई। बलरामपुर एसपी राजेश अग्रवाल समेत कई पुलिस अफसर पहले रामानुजगंज पहुंचे और यहां से झारखंड के रमकंडा भी पहुंचे हैं। एसपी ने झारखंड पुलिस अधिकारियों से बात की और आरोपियों को पकड़ने में सहयोग मांगा। एसपी ने कहा कि लुटेरों को पकड़ने विशेष टीम बनाई गई है। लुटेरों की तलाश में झारखंड के साथ छत्तीसगढ़ पुलिस टीम लगी हुई है।

वारदात के विरोध में रामानुजगंज बंद: लूट के बाद नगर के व्यापारियों ने व्यवसायिक संस्थानें बंद कर घटना को लेकर विरोध जताया। व्यापारियों ने कहा कि, 11 महीने पहले 17 अक्टूबर 2023 को रामानुजगंज के दीपक ज्वेलर्स की संचालिका सुषमा सोनी से भी लूट की वारदात हुई थी। सुबह 11 बजे जेवर से भरा बैग लेकर बाइक सवार दो युवक भाग निकले थे। बैग में 8 लाख रुपए के जेवर रखे हुए थे। इस घटना का पुलिस अब तक खुलासा नहीं कर सकी है। पति की मौत के बाद सुषमा सोनी दुकान का संचालन कर रही थी।

पार्षद भी हैं दुकान संचालक: दुकान के संचालक राजेश सोनी वार्ड क्रमांक-8 के पार्षद भी हैं। रामानुजगंज में उनकी सबसे बड़ी ज्वेलरी शॉप है। राजेश सोनी ने ज्वेलरी शॉप की ब्रांच बलरामपुर में भी खोली है। वे बलरामपुर ज्वेलरी शॉप संभालते हैं। वहीं रामानुजगंज के ज्वेलरी शॉप का काम उनकी बहन सीमा सोनी देखती हैं।

रेकी कर वारदात को अंजाम देने की आशंका: बताया जा रहा है कि, रामानुजगंज के दुकान में ही स्टॉक का पूरा सोना रखा हुआ था। संचालक के मुताबिक, दुकान से लुटेरे करीब 8 किलो सोना लूट ले गए हैं। आशंका है कि लुटेरों ने पहले ही दुकान की रेकी की थी। उन्होंने ऐसे समय को लूट के लिए तय किया था, जब दुकान में ग्राहकों की संख्या सबसे कम रहती है।

बारहमासी सब्जी के व्यापारी बने राजकुमार, आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ाया कदम'

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। राजकुमार पिता अमीरसाय ग्राम पंचायत बरदर के निवासी हैं, कृषक राजकुमार का जीवनोपार्जन का माध्यम कृषि पर आधारित था। राजकुमार पेशे से लघु कृषक है, वह वर्षा की पानी के भरोसे धान की खेती करता था, परन्तु कुछ वर्षों से बारिश की अनियमितता होने के कारण कृषि कार्य हेतु सिंचाई सुविधा ना होने के कारण दूर से पानी लाना पड़ता था। जिससे उसे अधिक परिश्रम एवं अधिक पैसा खर्च करना पड़ता था और उत्पादन भी अपेक्षाकृत कम होता था एवं वर्ष में केवल एक ही फसल (खरीफ) ले पाता था। राजकुमार अन्य ग्रामीण कृषकों की तरह खेती के लिए वर्षा के जल पर ही निर्भर था और वर्षा पर्याप्त नहीं होने पर परिवार को गांव के ही अन्य जगह मे मजदूरी करनी पड़ती थी। हमेशा से ही उसके स्वयं के खेत में सिंचाई सुविधा की कमी होती थी और वह हमेशा से चाहते थे की उनके खेत या खेत के आसपास सिचाई सुविधा उपलब्ध हो जाये। जिससे अल्पवर्षा के समय कृषि हेतु सिंचाई सुविधा मिल सके तथा पैदावार अधिक हो सके।

राजकुमार ने इस सपना को पूरा करने के लिए महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना अधिनियम के तहत निजी डबरी निर्माण हेतु ग्राम पंचायत में अर्जी दी। इसके लिए ग्राम पंचायत में ग्राम सभा में राजकुमार के निजी भूमि में डबरी निर्माण का प्रस्ताव किया गया। तत्पश्चात जिला पंचायत द्वारा मनरेगा योजना के तहत वित्तीय वर्ष 2023-2024 को 2 लाख 25 हजार रूपये की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गयी। डबरी निर्माण का लाभ प्राप्त किया। इस निर्माण ने उनके परिवार के जीवन में एक नई उम्मीद की किरण जगाई है।

डबरी निर्माण के पश्चात् इस बरसात में सिंचाई हेतु पानी की उपलब्धता होने से अब रामकुमार खुशहाल किसान कहलाने लगे हैं। रामकुमार बताते है कि खेत में निजी डबरी निर्माण होने के पश्चात खरीफ सीजन में धान फसल की बहुत अच्छी पैदावार होने लगी है। राजकुमार और उनके परिवार ने इस डबरी का उपयोग बारहमासी सब्जी उत्पादन में भी किया करते है, जिसमें सरसों, तिल्ली, भुट्टा (मक्का) से लेकर धान की फसल और मछली पालन तक का सफर तय किया गया है।

डिप्टी कमिश्नर बने शराब कोचिया

सप्ताहभर घूमकर की नकली शराब की डील, पकड़ी 60 पेटी 'गोवा', मोतीलाल साहू चला रहा था धंधा

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। रायपुर में आबकारी विभाग ने बड़ी मात्रा में नकली शराब पकड़ी है। 300 लीटर ओपी (ओवर प्रूव्ड लिक्विड) भी बरामद किया है। इसका इस्तेमाल नकली शराब बनाने में होता था। इसके साथ आरोपियों मोतीलाल साहू और युवराज साहू को भी पकड़ा गया है। खास बात यह है कि आरोपियों तक पहुंचने के लिए एक्साइज डिपार्टमेंट के डिप्टी कमिश्नर विकास गोस्वामी खुद कोचिया बने। इसके लिए उन्होंने एक सप्ताह तक अवैध शराब का धंधा करने वाला बने और नकली शराब बेचने वालों को ट्रेस कर उन तक पहुंचे।

ऐसे हुआ ये ऑपरेशन: डिप्टी कमिश्नर विकास गोस्वामी ने बताया कि, हमें कई दिनों से नकली शराब के काम की जानकारी मिल रही थी। हमें इसे बनाने वालों को पकड़ना था। इसलिए ऑपरेशन प्लान किया गया। वे खुद कोचिया बने और नकली शराब बेचने वालों से संपर्क किया।

अलग-अलग नंबरों से नकली शराब बनाने वालों से डील की बातचीत की। पकड़े गए आरोपी मोतीलाल साहू से डील होने के बाद उसके पास से 40 पेटी गोवा ब्रांड की नकली शराब जब्त की गई। बिना होलोग्राम वाली ये शराब कार से बरामद की गई। इसी तरह मिनी ट्रक से टीम ने 12 पेटी और लावारिस हालत में 8 पेटी नकली शराब बरामद की है। युवराज के पास से नकली शराब बनाने में इस्तेमाल होने वाली 300 लीटर स्पिरिट भी मिली है। इससे 1500 लीटर नकली शराब बनाई जा सकती थी।

राष्ट्रीय वन शहीद दिवस पर विशेष लेख, वन शहीदों के बलिदान का सम्मान

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। राष्ट्रीय वन शहीद दिवस वनों और वन्यजीवों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले वन रक्षकों, रेंजरों और अन्य कर्मचारियों को सम्मान देने के लिए मनाया जाता है। यह दिन हर वर्ष 11 सितंबर को मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का उद्देश्य वनों और वन्यजीवों की रक्षा के लिए समर्पित लोगों को सम्मानित करना, वनों के संरक्षण के महत्व को समझाना और वनों के संरक्षण के लिए बहादुरी से लड़ने वाले लोगों के बलिदान को याद करना है।

राष्ट्रीय वन शहीद दिवस की शुरुआत 1970 में हुई थी, जब भारत के मारवाड़ राज्य में खेजड़ली नरसंहार के नाम से जानी जाने वाली दुखद घटना घटी थी। यह ऐतिहासिक घटना राजस्थान के महाराजा अभय सिंह द्वारा बिश्नोई गांव खेजड़ली में पेड़ों को काटने के आदेश के बाद शुरू हुई थी, जिसका बिश्नोई समुदाय ने कड़ा विरोध किया था। इस अवसर पर वनों के संरक्षण के प्रति समाज में जागरूकता बढ़ाने, वनों और वन्यजीवों की रक्षा के लिए की जाने वाली लड़ाई में वन रेंजरों के सामने आने वाले खतरों को उजागर करना, पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में वनों की अहम भूमिका को समझाना और पृथ्वी के हरित आवरण को बचाने के लिए भावी पीढ़ियों को शिक्षित करना शामिल हैं। इस दिन वृक्षारोपण अभियान, शैक्षिक कार्यशालाएं और जागरूकता अभियान आयोजित किए जाते हैं। वन शहीद दिवस उन वीर वन कर्मचारियों और अधिकारियों की याद में मनाया जाता है जिन्होंने जंगलों और वन्यजीवों की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी। यह दिन उन सभी शहीदों को सम्मानित करने का एक अवसर है जिन्होंने अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए देश के पर्यावरण और वन्य जीवन की सुरक्षा के लिए अपनी जान न्योछावर कर दी। वन शहीद दिवस का उद्देश्य न केवल इन वीर जवानों के बलिदान को याद करना है, बल्कि उनके परिवारों को समर्थन और सहानुभूति प्रदान करना भी है।

भारत में वनों का महत्व केवल पर्यावरणीय संतुलन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे समाज, संस्कृति और अर्थव्यवस्था के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वन न केवल प्राकृतिक संसाधनों का भंडार हैं, बल्कि वे अनेक जीवों के आवास भी हैं। इन्हीं कारणों से, वनों की सुरक्षा एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। वन रक्षक अक्सर अवैध लकड़ी काटने वालों, शिकारियों, और अन्य आपराधिक तत्वों से लड़ते हुए अपने प्राणों की आहुति देते हैं। इसके साथ ही उन्हें प्राकृतिक आपदाओं और कठिन परिस्थितियों का भी सामना करना पड़ता हैं। वन शहीदों के बलिदान को सम्मान देने और उनके परिवारों को सहायता प्रदान करने के लिए केंद्र सरकार और राज्य सरकार ने कई महत्वपूर्ण योजनाएं भी चला रही है।

कांग्रेस जिला अध्यक्ष ने किया प्रेस कॉन्फ्रेंस

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। जिलाध्यक्ष एमसीबी अशोक कुमार श्रीवास्तव ने अपने बयान मे बताया की विष्णुदेव साय के शासन मे आम जनता त्राहि त्राहि कर रहे है एक साल के शासनकाल मे लोगो को नही है कोई सुविधा निर्माण कार्य मे प्रयोग की जाने वाली समाग्री से लेकर रेत, कोयला बिजली , जमीन की खरीद बिक्री पर भारी भ्रष्टाचार हो रहे है और विष्णुदेव साय की सरकार केवल विष्णुभोग की तरह भोग बिलास मे लग गई है।

भाजपा सरकार में जनता को लूटने की खुली छूट है। 'विष्णुभोग' के लिए वसूला जा रहा है

50 रुपया प्रति बोरा सीमेंट पर अतिरिक्त दाम। अचानक 260 से बढ़ाकर 310 रूपए प्रति बोरा कर दिया गया है। सीमेंट की कीमत में अचानक एक चोथाई की भारी भरकम वृद्धि भाजपा सरकार के कमीशनखोरी और मुनाफाखोरी का प्रमाण है। सीमेंट उत्पादन के लिए तमाम कच्चा माल, लाइमस्टोन हमारा, कोयला हमारा, जमीन हमारी, बिजली हमारी और हमें ही महंगे दामों पर सीमेंट खरीदने के लिए मजबूर कर रही है भाजपा सरकार । छत्तीसगढ़ सीमेंट का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है, यहां हर माह लगभग 30 लाख टन से अधिक सीमेंट का उत्पादन होता है, पहले केंद्र की मोदी सरकार 28 प्रतिशत का भारी भरकम जीएसटी लगाया और अब साय सरकार के संरक्षण में कीमतों में अचानक बढ़ोत्तरी जनता के साथ अन्याय है। हर सर पर छत का वादा करके सरकार में आयी भारतीय जनता पार्टी के शासन में भवन निर्माण की सामग्रीयों में लगातार बेतहाशा वृद्धि हो रही है। रेत के दाम पिछले 9 महीने में चार गुना बढ़ गए, स्टील की कीमते दुगना हो गई है और अब सीमेंट के दाम में 50 रूपए प्रति बारी की वृद्धि से गरीबों और मध्यमवर्गीय परिवारों के अपने घर के सपनों पर करनी चोट है। पीएम आवास योजना पर भी विपरीत असर पड़ेगा। देश और प्रदेश के विकास, इंफ्रास्ट्रक्चर, निर्माण में सीमेंट एक अहम घटक है, सीमेंट के दाम में वृद्धि से न केवल निजी बल्कि सरकारी प्रोजेक्ट में भी निर्माण लागत बढ़ जाएगी, पुल पुलिया, बांध, सीसी रोड, भवन निर्माण कार्य प्रभावित होंगे, रियल एस्टेट सेक्टर में भी नकारात्मक प्रभाव निश्चित है। रोजगार पैदा करने में कृषि के बाद रियलस्टेट दूसरा सबसे बड़ा सेक्टर है, सीमेंट की कीमत में अचानक वृद्धि से रियल एस्टेट व्यवसाय की कमर टूट जाएगी, लाखों की संख्या में लोग बेरोजगार हो जायेंगे पूर्ववर्ती कांग्रेस की सरकार के समय सीमेंट, स्टील, रेत के दाम नियंत्रित थे, अब भाजपा सरकार के अनुचित सरंक्षण में सीमेंट कंपनियां निरंकुश हो चुकी है।

एक साधारण किसान से मछली पालन के अग्रदूत बनने तक की प्रेरक यात्रा

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। जिले के ग्राम पंचायत तारा बहरा, तहसील केल्हारी के निवासी अरविन्द कुमार सिंह एक साधारण किसान थे। उनका जीवन भी अन्य ग्रामीण किसानों की तरह संघर्ष पूर्ण और चुनौतियों से भरा हुआ था। सीमित संसाधनों और पारंपरिक खेती के साधनों के माध्यम से आजीविका चलाने वाले अरविंद के लिए अपने परिवार की जरूरतें पूरी करना आसान नहीं था। फिर भी अरविन्द ने कभी हार नहीं मानी। उन्होंने जीवन के हर मोड़ पर सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया और हमेशा कुछ नया करने की कोशिश की। उनकी जिजीविषा और आत्मविश्वास ने उन्हें एक ऐसे रास्ते पर अग्रसर किया, जिसने न केवल उनके जीवन को बदल दिया, बल्कि उनके जैसे सैकड़ों किसानों के लिए एक नया मार्ग भी प्रशस्त किया।

अरविन्द कुमार सिंह का जन्म एक सामान्य किसान परिवार में हुआ था। उनके पिता खेती से जुड़े थे, और खेती ही उनके परिवार की मुख्य आजीविका का स्रोत था। अपने परिवार के अन्य सदस्यों की तरह अरविन्द भी बचपन से ही खेतों में काम करने लगे थे। उन्होंने अपने परिवार के साथ खेतों में मेहनत की और फसल उगाने के पारंपरिक तरीकों को सीखा। उनका परिवार खेती से होने वाली मामूली आय पर निर्भर था, जो अक्सर मौसम की अनिश्चितताओं, फसल की बर्बादी, और बाजार की कीमतों में उतार-चढ़ाव के कारण अपर्याप्त साबित होती थी। अरविन्द को यह अहसास हुआ कि पारंपरिक खेती से मिलने वाली आय उनके परिवार के लिए पर्याप्त नहीं थी, और उन्हें किसी वैकल्पिक आय स्रोत की तलाश करनी होगी। अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए अरविन्द ने पारंपरिक खेती के अतिरिक्त अन्य विकल्पों के बारे में सोचना शुरू किया। वे जानते थे कि कृषि के क्षेत्र में कुछ नया करना आसान नहीं होगा, लेकिन उनका दृढ़ निश्चय और अपने परिवार के लिए बेहतर भविष्य की चाहत उन्हें नए रास्तों की खोज के लिए प्रेरित करती रही।

मछली पालन की दिशा से पहली कदम में ही मिली सफलता

इसी दौरान अरविंद को राज्य की मछली पालन योजनाओं के बारे में जानकारी मिली। उन्होंने महसूस किया कि मछली पालन एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें कम समय और कम लागत में अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है। उन्होंने इसे एक नए अवसर के रूप में देखा, जो न केवल उनकी आर्थिक स्थिति को सुधार सकता था, बल्कि उनके जैसे अन्य किसानों के लिए भी एक नया रास्ता खोल सकता था। अरविन्द ने मछलीपालन के अपने विचार को मूर्त रूप देने के लिए राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ उठाने का निर्णय लिया। उस समय छत्तीसगढ़ की विष्णुदेव साय सरकार, के शासन में मछलीपालन को बढ़ावा देने के लिए कई प्रोत्साहन योजनाएं चला रही थी। वहीं से अरविन्द ने भी अपने विचारों को स्थानीय प्रशासन और कृषि अधिकारियों के साथ साझा किया, जिन्होंने उनकी योजनाओं को समझा और उन्हें सहयोग का आश्वासन दिया। सरकार की तरफ से उन्हें डबरी (तालाब) निर्माण के लिए 70,000 रुपए की सब्सिडी दी गई। इसके अलावा उन्हें मछली के बीज (अंडे) भी उपलब्ध कराए गए, जिससे वे मछली पालन के व्यवसाय को प्रारंभ कर सके।

जिले में अब तक 967.1 मिमी औसत वर्षा की गयी दर्ज

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले में 01 जून से 11 सितंबर 2024 तक 967.1 मिमी औसत वर्षा दर्ज की गई है। कार्यालय कलेक्टर भू-अभिलेख शाखा से प्राप्त जानकारी के अनुसार 1 जून से अब तक सर्वाधिक वर्षा 1117.2 मिमी मनेन्द्रगढ़ तहसील में तथा न्यूनतम 860.4 मिमी खड़गवां तहसील में दर्ज की गई है। इसके अलावा तहसील केल्हारी में 1108.8 मिमी, तहसील चिरमिरी में 901.8 मिमी, तहसील कोटाडोल में 924.4 मिमी, तहसील भरतपुर में 890.3 मिमी तथा तहसील खड़गवां में 860.4 मिली मीटर वर्षा दर्ज की गई है।

जनपद सीईओ जल्द करे नये अमृत सरोवर का ंचिन्हाकंन : कलेक्टर

असर्वेक्षित गांवों की जानकारी तैयार करें राजस्व अधिकारी : अपर कलेक्टर

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट ने आज जिला कार्यालय सभा कक्ष में समय-सीमा की बैठक में जिला अधिकारियों के कार्यों की विभागवार समीक्षा की। उन्होंने समस्त विभाग से हाई कोर्ट से लंबित प्रकरण, विभागीय महत्वपूर्ण पत्रों, कलेक्टर कांफ्रेंस की जानकारी, पिछले शिविर के लंबित मुद्दे, डीएमएफ कार्यों की प्रगति, जन शिकायत, जन चौपाल, पीएम पोर्टल की जानकारी लेकर आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए कहा कि जिले के भरतपुर ब्लॉक में आधारभूत आवश्यकताओं की सूची बनाकर तैयार करें इसके साथ ही विशेष रूप से कमजोर पिछड़े जनजातिय समूह के लिए ट्राइबल सब प्लान के अनुसार कार्यों की सूची तैयार करते हुय ग्राम पंचायतों में कार्यों को पूर्णता के लिए सभी विभाग आपस में समन्वय बनाकर कार्य करें। कलेक्टर ने ग्राम पंचायतों में असर्वेक्षित ग्रामों की जानकारी लेते हुये उन्होंने संबंधित ग्राम पंचायतों की तहसीलदार तथा राजस्व निरीक्षक को पटवारियों के माध्यम से ग्राम पंचायत के सरपंच तथा सचिवों के द्वारा सर्वेक्षण करने के निर्देश दिये। कलेक्टर ने समस्त जनपद सीईओ को अपने जनपदों में नये अमृत सरोवर का चिन्हांकन करने के निर्देश दिये है। जिले में हितग्राही मूलक विभाग समन्वय बनाकर योजनाओं का लाभ दिलाने का कार्य करें। जिले में राशन कार्ड के नवीनीकरण के कार्यों में तेजी लाते हुये अपडेट करने के निर्देश दिये। उन्होंने जिले में समिति, उपार्जन केंद्र, पंचायत तथा गांवों की सूची तैयार करने तथा समाज कल्याण विभाग द्वारा निराश्रित निधि से उपकरण खरीदी जाती है उसकी जानकारी मण्डी से अपडेट करने के निर्देश दिये। जल जीवन मिशन के तहत 20 प्रतिशत भुगतान रोकने, मनेंद्रगढ तथा चिरमिरी में राष्ट्रीय परिवार सहायता राशि की जानकारी लेने के निर्देश दिये।

मसाहती ग्रामों के सर्वे में आ रही कई समस्याओं के निराकरण के संबंध में अपर कलेक्टर द्वारा राजस्व अधिकारियों एवं भू-अभिलेख अधीक्षक को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गये थे। इसी कड़ी में आज अपर कलेक्टर अनिल सिदार ने जिले के समस्त एसडीएम, राजस्व निरीक्षक, पटवारियों को मसाहती ग्रामों का सर्वे के संबंध में फील्ड में आ रही समस्याओं का निराकरण करने के निर्देश दिये। अपर कलेक्टर ने राजस्व निरीक्षक, पटवारियों ने जो भी कार्य किये है उनके जानकारी लेकर मसाहती ग्रामों का सर्वे कराकर प्रारंभिक प्रकाशन के निर्देश दिए गये। असर्वेक्षित गांवों की जानकारी तैयार करें, राजस्व अधिकारियों को निर्देश देते हुये अपर कलेक्टर ने विभिन्न विभागों के कार्यालय के लिए भूमि आबंटन की कार्यवाही लंबित है उन्होंने जिला अधिकारियों को निर्देशित किया है कि वे नियमानुसार भूमि का चिन्हांकन, नक्शा, खसरा तथा चौहदी तैयार कर प्रकरण दर्ज कराये। जिससे विभागों को भूमि आबंटन की कार्यवाही पूर्ण की जा सके। नगर पालिका सीएमओ मनेंद्रगढ़ तथा नगर पंचायत खोंगापानी को आवारा मवेशियों के पालकों पर जुर्माना वसूल करने के निर्देश दिये। उन्होंने सभी नगर पंचायत, नगर पालिका एवं नगर निगम में वार्डवार आवारा पशुओं पर जुर्माना की कार्यवाही करने के निर्देश दिये। इस दौरान एसडीएम प्रवीण कुमार भगत, लिंगराज सिदार, विजयेंद्र सारथी, सर्व तहसीलदार, सर्व जनपद सीईओ, सर्व नगर पंचायत सीएमओ सहित जिला अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

465 नगर सैनिकों की होगी भर्ती

21 हजार अभ्यर्थियों ने किया आवेदन, 16 सितंबर से 1 अक्टूबर तक होगा फिजिकल टेस्ट

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में एक दशक बाद नगर सैनिकों के 465 पदों पर भर्ती होगी। नगर सैनिकों के 200 पद और महिला छात्रावासों में महिला नगर सैनिकों के 265 पद शामिल हैं। इसमें भाग लेने के लिए संभाग के 21 हजार युवाओं ने आवेदन किया है। जिले के भरनी परसदा स्थित अग्निशमन और एसडीआरएफ मैदान पर 16 सितंबर से 1 अक्टूबर तक भर्ती की प्रकिया पूरी होगी। जिसमें युवाओं को फिजिकल टेस्ट देना होगा। जिसमें युवा पहुंच सकते हैं।

रोज 1500 प्रतिभागी होंगे शामिल: अग्निशमन एवं आपातकालीन सेवाएं के डीआईजी एसके ठाकुर ने बताया कि, प्रतिदिन करीब 1500 उम्मीदवारों की दक्षता परीक्षा मैदान में होगी। दक्षता परीक्षा 100 अंकों की होगी। पुरुष उम्मीदवारों के लिए 100 मीटर दौड़, 800 मीटर दौड़, लम्बी कूद और ऊंची कूद होगी। महिला उम्मीदवारों के लिए 100 मीटर दौड़ को छोड़कर शेष तीनों प्रतियोगिताएं होंगी।

जिलेवार पदों की संख्या: नगर सैनिकों के 200 पदों में बिलासपुर जिले के लिए 75 पद, मुंगेली के लिए 25, जीपीएम 25, रायगढ़ 25, कोरबा 25 और जांजगीर 25 शामिल हैं। सभी उम्मीदवारों को कॉल लेटर तिथिवार जारी कर दिया गया है।

मुयमंत्री की केंद्रीय मंत्री शाह से भेंट

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आज केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह से उनके कार्यालय नॉर्थ ब्लॉक नई दिल्ली में सौजन्य भेंट कर प्रदेश के सहकारिता क्षेत्र से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सहकारिता के क्षेत्र में उन्नति कर रहा है। उन्होंने जानकारी दी कि गत दिवस राज्य शासन द्वारा दुग्ध संघों के प्रबंधन और संचालन आगामी पांच वर्ष के लिए राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के माध्यम से किए जाने पर सहमति बनी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि इस समझौते से लगभग 11 हजार गांवों के पशुपालक और दुग्ध-उत्पाद किसानों की आय में बढ़ोतरी होगी। सरकार के माध्यम से सहकारिता के क्षेत्र को मजबूत करने की दिशा में इन 11 हजार गांवों में बहुउद्देशीय सहकारी संस्थाओं का गठन किया जाएगा। केंद्रीय गृह मंत्री श्री शाह ने प्रदेश शासन के इस नवाचार निर्णय की सराहना की और इस दिशा में पूरे प्रदेश में काम करने का सुझाव दिया। श्री शाह ने सहकारिता क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों में केंद्र सरकार से हरसंभव सहायता देने का आश्वासन भी दिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आशा व्यक्त की कि इस निर्णय से प्रदेश के दुग्ध-उत्पादक किसानों की संपन्नता के साथ खाद्य प्र-संस्करण और कृषि आधारित उद्योगों को भी लाभ मिलेगा।

किसानों को कृषि आधारित उद्योगों के लिए न केवल कच्चे माल बल्कि उनके उत्पादो पर भी पूरी भागीदारी होगी। उन्होंने केंद्रीय मंत्री श्री शाह को मध्यप्रदेश में रोजगार और उद्योग को बढ़ावा देने के लिए संभाग स्तर पर आयोजित किए जा रहे रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव के बारे में भी जानकारी दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने केंद्र शासन द्वारा सोयाबीन की फसल के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य पर उपार्जन किए जाने के निर्णय के लिए धन्यवाद भी ज्ञापित किया।

जम्मू-कश्मीर के उधमपुर में 2 आतंकी ढेर

जम्मू (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के उधमपुर में सुरक्षाबलों से एनकाउंटर में 2 आतंकी मारे गए हैं। सेना ने बताया कि आर्मी के फर्स्ट पैरा के जवानों को बुधवार सुबह उधमपुर के खंडरा टॉप के जंगलों में 2-3 आतंकियों के छिपे होने की सूचना मिली थी। इसके बाद पुलिस के साथ मिलकर सर्च ऑपरेशन चलाया गया। दोपहर 12.50 बजे आतंकियों ने जवानों पर फायरिंग की। जवाब में जवानों ने भी फायरिंग की। करीब चार घंटे चले एनकाउंटर के बाद सुरक्षाबलों ने तीनों आतंकियों को ढेर कर दिया। वहीं जम्मू-कश्मीर के अखनूर में 10-11 सितंबर की दरमियानी रात 2ः35 बजे पाकिस्तानी जवानों ने बॉर्डर पर सीजफायर का उल्लंघन किया। जवाब में बीएसएएफ के जवानों ने भी फायरिंग की। गोलीबारी में बीएसएएफ का एक जवान घायल हो गया है। बीएसएएफ के प्रवक्ता ने बताया कि जवाबी एक्शन में पाकिस्तान को हुए नुकसान की अभी जानकारी नहीं है। घटना के बाद बीएसएएफ के जवान बॉर्डर पर कड़ी निगरानी रख रहे हैं। 18 सितंबर को जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव की पहले फेज की वोटिंग होनी है। इससे सात दिन पहले उधमपर में एनकाउंटर और सीजफायर का उल्लघंन हुआ है। लिहाजा सुरक्षाबलों को अलर्ट पर रखा गया है। कुपवाड़ा के केरन सेक्टर से भारी मात्रा में हथियार बरामद सेना और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने खुफिया जानकारी मिलने पर कुपवाड़ा के केरन सेक्टर में सर्च ऑपरेशन चलाया। इस ऑपरेशन में सेना ने बड़ी संख्या में हथियार, गोलियां और विस्फोटक सामग्री बरामद की। इसमें्र्च-47 की गोलियां, हैंड ग्रेनेड और विस्फोटक उपकरण शामिल हैं।

मुंबई में नगालैंड के मंत्री तेमजेन के खिलाफ जांच शुरू

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई पुलिस ने नगालैंड के कैबिनेट मंत्री और भाजपा सांसद तेमजेन इम्ना अलोंग के खिलाफ एक कंपनी से जुड़े निवेश विवाद मामले में जांच शुरू की है। मुंबई पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा के स्पेशल टास्क फोर्स (स्न्नस्त्र) ने मंगलवार (10 सितंबर) को बॉम्बे हाई कोर्ट में इसकी जानकारी दी। यह जांच जस्टिस रेवती मोहिते डेरे और जस्टिस पृथ्वीराज चव्हाण की बेंच के आदेश के बाद शुरू की गई है। मुंबई स्थित कंपनी हेजल मर्केंटाइल लिमिटेड ने उनके खिलाफ याचिका लगाई है। कंपनी का आरोप है कि उसने तेमजेन के कहने पर नगालैंड में 125 करोड़ रुपए इन्वेस्ट किए थे। हालांकि, सभी सप्लाई कमिटमेंट्स को पूरा करने और चालान जारी करने के बाद अलॉन्ग ने कंपनी के लोगों से दूरी बना ली। मामला 2015 का है। तब तेमजेन किसी पद पर नहीं थे। कंपनी ने 9 फरवरी, 2024 को में शिकायत दर्ज कराई थी। कंपनी ने चावल-चीनी सप्लाई और कंस्ट्रक्शन कॉन्ट्रैक्ट लिया था कंपनी ने बताया कि तेमजेन ने 2015 और 2018 के बीच नगालैंड में निवेश करने के लिए उनसे संपर्क किया था। कंपनी ने 21 अप्रैल 2015 को एक समझौता ज्ञापन साइन किया और लगभग 125 करोड़ रुपए का निवेश किया।

हरियाणा में 4 घंटे बाद ही आप की पांचवीं लिस्ट

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा में आम आदमी पार्टी ने विधानसभा चुनाव के लिए बुधवार को अपनी पांचवीं लिस्ट भी जारी कर दी है। इसमें पार्टी ने 9 चेहरों को चुनावी मैदान में उतारा है। पार्टी ने यह लिस्ट अपनी चौथी लिस्ट के 4 घंटे बाद ही जारी कर दी है। इससे पहले चौथी लिस्ट में पार्टी ने 21 उम्मीदवारों के नाम की घोषणा की थी। ये सभी पहली बार विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। आप ने 5 लिस्टों में अब तक 70 उम्मीदवारों का ऐलान कर दिया है। 20 उम्मीदवारों का ऐलान होना बाकी है। आप ने जींद के जुलाना विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस की उम्मीदवार विनेश फोगाट के सामने पूर्व वर्ल्ड रेसलिंग एंटरटेनमेंट रेसलर कविता दलाल को उतारा है।

खड़गे बोले- मोदी झूठों के सरदार

अनंतनाग (एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने बुधवार (11 सितंबर) को अनतंनाग में रैली की। उन्होंने कहा- जम्मू-कश्मीर में आज हर जगह हमले हो रहे हैं, फिर भी मोदी जी झूठ बोलने में शर्माते नहीं हैं। क्योंकि वे झूठों के सरदार हैं। उन्होंने लोकसभा चुनाव का जिक्र करते हुए कहा- कहां गए 400 पार वाले? वो (भाजपा) 240 सीट पर सिमट गए। अगर हमें (विपक्ष को) 20 सीटें और आ जातीं तो ये सारे लोग जेल में होते। ये लोग जेल में रहने के लायक हैं। खड़गे ने कहा- भाजपा भाषण तो बहुत देती है, लेकिन काम और कथनी में बहुत अंतर होता है। भाजपा चाहे जितनी कोशिश कर ले, कांग्रेस और नेशनल कांफ्रेंस का गठबंधन कमजोर नहीं होगा। हमने संसद में अपनी ताकत दिखाई है। हम उसी ताकत के साथ आगे बढ़ेंगे।

1. भाजपा धर्म के नाम पर बांटने की कोशिश कर रही अनंतनाग एक ऐतिहासिक महत्व की जगह है। यहां मौजूद अमरनाथ जी की गुफा के दर्शन के लिए हजारों लोग आते हैं, क्योंकि यह धार्मिक एकता का स्थल है। आज भाजपा यहां के लोगों को धर्म के नाम पर बांटने की कोशिश कर रही है, लेकिन वे कभी कामयाब नहीं होंगे।

2. राहुल की भारत जोड़ो यात्रा से विपक्ष को फायदा राहुल गांधी जी ने कन्याकुमारी से कश्मीर तक भारत जोड़ो यात्रा निकाली थी। इस यात्रा में इंडिया गठबंधन की पार्टियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, जिससे काफी कामयाबी मिली।

3. भाजपा हमारे डर से बार-बार अपनी लिस्ट बदल रही नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस का गठबंधन देख क्ष्ठ्ठक्क बौखला गई है, इसलिए वह जम्मू-कश्मीर की लिस्ट बार-बार बदल रही है। इससे आप अंदाजा लगा सकते हैं कि भाजपा के लोग इंडिया गठबंधन की एकता को देखकर डर गए हैं।

4. मोदी झूठों के सरदार, वे लोगों को गुमराह करते हैं मोदी ने हर खाते में 15-15 लाख रुपए, हर साल 2 करोड़ नौकरी का वादा किया था, लेकिन किया कुछ नहीं। ये लोगों को गुमराह करते हैं। जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी हमले हो रहे हैं, फिर भी मोदी जी झूठ बोलने में शर्माते नहीं हैं। क्योंकि वे झूठों के सरदार हैं।

बारामूला से लोकसभा सांसद इंजीनियर राशिद जेल से बाहर आए

श्रीनगर (एजेंसी)। कश्मीर की बारामूला सीट से लोकसभा सांसद शेख अब्दुल राशिद (इंजीनियर राशिद) आज (11 सितंबर) को तिहाड़ से बाहर आए। 10 सितंबर को दिल्ली की अदालत ने उन्हें 2 अक्टूबर तक की अंतरिम जमानत दी थी। उन्होंने जेल से निकलकर कहा कि साढ़े पांच साल जेल में रहने के बाद मैं खुद को मजबूत और अपने लोगों के लिए गर्व से भरा महसूस कर रहा हूं। मैं वादा करता हूं कि अपने लोगों को निराश नहीं करूंगा। राशिद ने कहा कि मैं शपथ लेता हूं कि मोदी ने जो %नया कश्मीर% का नैरेटिव बनाया है, जिसे लोगों ने नकार दिया है, उसके खिलाफ लड़ाई लड़ूंगा। मोदी ने 5 अगस्त 2019 को जो किया, उसे लोगों ने खारिज कर दिया है। मैं कश्मीर में हमेशा के लिए शांति लाना चाहता हूं और ये साबित करना चाहता हूं कि कश्मीरी पत्थरबाज नहीं हैं। लेकिन हम अपने राजनीतिक अधिकारों के साथ समझौता नहीं करेंगे। उमर अब्दुल्ला बोले- कश्मीरियों का वोट पाने के लिए रिहाई दी गई नेशनल कॉन्फ्रेंस पार्टी के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला ने मंगलवार को कहा था कि राशिद को सिर्फ इसलिए जमानत दी गई है ताकि कश्मीरियों के वोट हासिल किए जा सकें। इनका मकसद लोगों की सेवा करना नहीं है। दरअसल, 2024 लोकसभा चुनाव में बारामूला सीट पर इंजीनियर राशिद ने उमर अब्दुल्ला को हराया था। इससे पहले पीडीपी प्रमुख और जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने कहा था कि राशिद की अवामी इत्तेहाद पार्टी भाजपा के लिए काम कर रही है। इस पर अब्दुल्ला ने कहा कि वह इस बारे में कुछ भी कहने पर बहुत एहतियात बरत रहे थे, लेकिन ये अच्छी बात है कि महबूबा मुफ्ती वह बात बोल रही हैं, जो लोगों के मन में चल रही है। 2016 में टेरर फंडिंग के आरोप में गिरफ्तार हुए थे इंजीनियर राशिद राशिद को 2016 में जम्मू-कश्मीर में आतंकी फंडिंग के आरोप में आप के तहत अरेस्ट किया गया था। 2019 से वो तिहाड़ जेल में बंद हैं। राशिद ने जेल में रहते हुए ही 2024 लोकसभा चुनाव में जीत दर्ज की थी। राशिद का नाम कश्मीरी व्यवसायी जहूर वताली की जांच के दौरान सामने आया था।

हाईकोर्ट ने 4 आतंकियों की फांसी को उम्रकैद में बदला

पटना (एजेंसी)। पटना के गांधी मैदान में 27 अक्टूबर 2013 को नरेंद्र मोदी की हुंकार रैली में हुए सीरियल ब्लास्ट में पटना हाईकोर्ट ने 4 आतंकियों की फांसी को उम्रकैद में बदला है। सिविल कोर्ट ने सभी को फांसी की सजा सुनाई थी। हाईकोर्ट ने बाकी 2 दोषियों की उम्रकैद की सजा को बरकरार रखा है। ब्लास्ट में निचली अदालत ने 4 को फांसी और 2 को उम्रकैद की सजा सुनाई थी। स्पेशल पीपी (पब्लिक प्रोसिक्यूटर) एलजी मनोज कुमार सिंह ने कहा कि ये बहुत अच्छा फैसला है। कोर्ट ने आरोपियों की उम्र को देखते हुए फांसी की सजा उम्र कैद में बदला है। सभी आरोपियों की उम्र कम है। हम लोगों ने घटना की गंभीरता को लेकर दलील दी थीं। न्यायालय ने कहा कि उम्र कम है, इन लोगों को भी जीने का अधिकार है। इसलिए फांसी की सजा नहीं दी गई। सभी दोषियों की उम्र 30 से 35 साल के बीच है। दोषियों के वकील इमरान घानी ने बताया कि अपील पर सुनवाई करते हुए 4 दोषियों को आजीवन कारावास (30 साल) की सजा सुनाई है, जबकि 2 दोषियों के लिए निचली अदालत के फैसले को सुरक्षित रखा है। यह फैसला जस्टिस आशुतोष कुमार की खंडपीठ ने दिया है। नुमान अंसारी, मोहम्मद मजीबुल्ला, हैदर अली, इम्तियाज आलम को निचली अदालत ने फांसी की सजा सुनाई थी, जिसे अब हाईकोर्ट ने उम्रकैद में बदल दिया है। वहीं, उमैर सिद्दकी और अजरहुद्दीन कुरैशी के लिए निचली अदालत का जो आजीवन कारावास का फैसला है, उसे यथावत रखा है। बचाव पक्ष के वकील इमारन घानी ने बताया कि इस फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाएंगे।

राहुल गांधी के घर के बाहर भाजपा का प्रोटेस्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में राहुल गांधी के घर के बाहर बुधवार को भाजपा सिख प्रकोष्ठ ने प्रदर्शन किया है। उनका कहना है कि कांग्रेस नेता ने अमेरिका में जाकर भारत और सिखों का अपमान किया है। विदेश धरती में हमारे देश को बदनाम किया है। उन्हें इसको लेकर माफी मांगनी चाहिए। भाजपा नेता आरपी सिंह और अन्य सिख नेताओं को दिल्ली पुलिस ने हिरासत में ले लिया है। दरअसल, अमेरिका दौरे के दौरान मंगलवार को राहुल ने कहा था- भारत में सिख समुदाय के बीच इस बात की चिंता है कि उन्हें पगड़ी, कड़ा पहनने की इजाजत दी जाएगी या नहीं? क्या वे गुरुद्वारे जा सकेंगे?

ये चिंता सिर्फ सिखों की नहीं बल्कि सभी धर्मों के लिए है। भाजपा बोली- राहुल अपने बयान पर मांफी मांगे भाजपा नेता आरपी सिंह का कहना है कि राहुल को माफी मांगनी चाहिए। उन्होंने भारत को बदनाम करने के लिए विदेशी धरती का इस्तेमाल किया। साथ ही सिखों के बारे में बयान दिया कि सिखों को पगड़ी पहनने और गुरुद्वारे में जाने की इजाजत नहीं है। जबकि ऐसा नहीं है। हरदीप सिंह बोले- सिख समुदाय पर राहुल की टिप्पणी गलत भाजपा नेता हरदीप सिंह पुरी ने मंगलवार को कहा;- 1984 में एक सोची-समझी साजिश के तहत सिखों का नरसंहार किया गया था।

कोलकाता रेप-मर्डर, डॉक्टरों ने ममता से मीटिंग की शर्तें रखीं

कोलकाता (एजेंसी)। ट्रेनी-डॉक्टर से रेप-मर्डर केस को लेकर जूनियर डॉक्टरों ने मंगलवार देर रात विरोध किया। उन्होंने कोलकाता पुलिस आयुक्त और स्वास्थ्य विभाग के प्रधान सचिव के इस्तीफे की मांग की। कोलकाता में ट्रेनी डॉक्टर से रेप-मर्डर केस में हड़ताली जूनियर डॉक्टर्स बुधवार को सरकार से बातचीत के लिए तैयार हो गए हैं। उन्होंने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को एक ईमेल भेजकर मिलने का समय मांगा है। बंगाल के चीफ सेक्रेटरी ने डॉक्टरों को आज शाम 6 बजे मुलाकात का टाइम दिया है। डॉक्टरों ने अपने डेलिगेशन से 30 लोगों के शामिल होने की बात कही थी, लेकिन सरकार के नए मेल में 12-15 लोगों के मिलने की इजाजत दी गई है। सीएम ममता ने मंगलवार (10 सितंबर) को डॉक्टरों को मीटिंग के लिए सचिवालय बुलाया था। स्वास्थ्य विभाग की तरफ से उन्हें मेल भेजा गया। हालांकि जूनियर डॉक्टरों ने मीटिंग में आने से मना कर दिया। डॉक्टर्स ने कहा- हम जिसका (राज्य स्वास्थ्य सचिव) इस्तीफा मांग रहे हैं, वही बैठक के लिए बुला रहा है। उसमें भी सरकार ने सिर्फ 10 डॉक्टरों को बुलाया। ये आंदोलन का अपमान है।

अमेरिका में इल्हान उमर से मिले राहुल

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका दौरे के आखिरी दिन मंगलवार देर रात राहुल गांधी ने वॉशिंगटन डीसी में अमेरिकी कांग्रेस के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की। रेबर्न हाउस में हुई इस मुलाकात में भारत विरोधी बयान देने वाली इल्हान उमर भी मौजूद थीं। राहुल के इल्हान से मिलने पर देश में विरोध शुरू हो गया है। भाजपा के कई नेताओं ने राहुल के उनसे मिलने की आलोचना की है। गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि देशविरोधी बातें करना और देश को तोड़ने वाली ताकतों के साथ खड़े होना राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी की आदत सी बन गई है। चाहे जम्मू-कश्मीर में देशविरोधी और आरक्षण विरोधी एजेंडे का समर्थन करना हो, या फिर विदेशी मंचों पर भारत विरोधी बातें करनी हो, राहुल गांधी ने देश की सुरक्षा और भावना को हमेशा आहत किया है। भाजपा प्रवक्ता संजू वर्मा ने कहा कि राहुल सत्ता में आने के लिए उतावले हैं इस वजह से ही वे एक कट्टरपंथी नेता से मिल रहे हैं। कौन है इल्हान उमर? 40 साल की इल्हान उमर सोमालियाई-अमेरिकी राजनेता हैं, जो साल 2019 में मिनिसोटा से चुनाव जीतकर अमेरिका के निचले सदन में आई थीं। वे अमेरिकी संसद यानी कांग्रेस में पहुंचने वाली पहली दो मुस्लिम महिला सांसदों में से एक हैं।

चुनाव के बीच हरियाणा विधानसभा भंग करने की सिफारिश

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा की भाजपा सरकार ने चुनाव के बीच विधानसभा भंग करने की सिफारिश कर दी है। इसके लिए बुधवार शाम को कैबिनेट की अर्जेंट मीटिंग बुलाई गई थी। जिसमें विधानसभा भंग करने की सिफारिश को मंजूरी दी गई। अब आगे के फैसले के लिए 9.30 बजे सीएम सैनी गवर्नर बंडारू दत्तात्रेय से मिलने राजभवन जाएंगे। विधानसभा भंग करने पर अंतिम मुहर गवर्नर लगाएंगे। प्रदेश में चुनाव के बीच ऐसी स्थिति बनने की वजह विधानसभा सत्र बुलाने का संवैधानिक संकट है।

संविधान के मुताबिक अधिकतम 6 महीने के भीतर विधानसभा का एक सत्र बुलाना अनिवार्य है। नायब सैनी के सीएम बनने के बाद 6 महीने खत्म होने की आखिरी तारीख 12 सितंबर है। अब चुनाव के बीच सत्र बुलाना संभव नहीं है। वहीं अर्जेंट मीटिंग में कृषि मंत्री कंवरपाल गुर्जर, स्वास्थ्य मंत्री कमल गुप्ता, लोक निर्माण मंत्री डॉ बनवारी लाल,

शहरी निकाय मंत्री सुभाष सुधा, परिवहन मंत्री असीम गोयल, खेल मंत्री संजय सिंह कैबिनेट मीटिंग में शामिल रहे। गवर्नर के मंत्रिमंडल की विधानसभा भंग करने को मंजूरी देने के बाद भी नायब सैनी कार्यवाहक ष्टरू के तौर पर काम करते रहेंगे। प्रदेश में केयरटेकर सरकार चलेगी। सरकार कोई भी नीतिगत फैसला नहीं ले सकेगी।

केजरीवाल की न्यायिक हिरासत 25 सितंबर तक बढ़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। शराब नीति केस में भ्रष्टाचार से जुड़े मामले में सीएम अरविंद केजरीवाल की न्यायिक हिरासत 25 सितंबर तक बढ़ाई गई है। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट में उन्हें वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए पेश किया गया। इसी मामले में आरोपी और आप विधायक दुर्गेश पाठक को अदालत ने जमानत 1 लाख रुपए के बॉन्ड पर जमानत दे दी है। सीबीआई की सप्लीमेंट्री चार्जशीट दायर होने के बाद कोर्ट के समन पर वे अदालत में पेश हुए थे। दरअसल, सीबीआई ने अरविंद केजरीवाल, दुर्गेश पाठक, विनोद चौहान, आशीष माथुर, सरथ रेड्डी के खिलाफ सप्लीमेंट्री चार्जशीट राउज एवेन्यू कोर्ट में पेश की थी। 3 सितंबर को कोर्ट ने चार्जशीट पर संज्ञान लिया। कोर्ट ने सभी आरोपियों को आज यानी 11 सितंबर तक अदालत में पेश होकर जवाब दाखिल करने के लिए कहा था। जवाब दाखिल होने के बाद कोर्ट ने केजरीवाल की न्यायिक

हिरासत बढ़ाई और दुर्गेश पाठक को जमानत दे दी। सीबीआई केस में गिरफ्तारी के खिलाफ केजरीवाल ने सुप्रीम कोर्ट में भी याचिका लगाई है। 5 सितंबर को इस मामले में सुनवाई के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया गया। वहीं, श्वष्ठ मामले में केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिल चुकी है। चार्जशीट में केजरीवाल का नाम मुख्य साजिशकर्ताओं में शामिल सीबीआई ने 30 जुलाई को चौथी सप्लीमेंट्री चार्जशीट दाखिल की थी, जिसमें केजरीवाल को आरोपी बनाया गया था। एजेंसी ने आरोप लगाया गया कि केजरीवाल शराब नीति घोटाले में मुख्य साजिशकर्ताओं में से एक हैं। सीबीआई को राउज एवेन्यू कोर्ट से 23 अगस्त को केजरीवाल पर मुकदमा चलाने की मंजूरी मिली थी। सीबीआई ने पांचवी और आखिरी चार्जशीट में कहा- केजरीवाल शुरू से आपराधिक साजिश में शामिल रहे इस केस में सीबीआईने 7 सितंबर को राउज एवेन्यू कोर्ट में अपनी पांचवी और आखिरी चार्जेशीट दाखिल की। सीबीआई ने कहा कि जांच पूरी हो गई है और इसमें सामने आया है कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल शराब नीति बनाने और उसे लागू करने की आपराधिक साजिश में शुरू से शामिल थे। वे पहले से ही शराब नीति के प्राइवेटाइजेशन का मन बना चुके थे। चार्जशीट के मुताबिक, मार्च 2021 में जब तत्कालीन डिप्टी ष्टरूमनीष सिसोदिया की अध्यक्षता में शराब नीति तैयार की जा रही थी, तब केजरीवाल ने कहा था कि पार्टी को पैसों की जरूरत है। उन्होंने अपने करीबी और ्क्क के मीडिया और संचार प्रभारी विजय नायर को फंड जुटाने का काम सौंपा था।

संक्षिप्त समाचार

आकाश दीप को मिल सकता है बांग्लादेश के खिलाफ अवसर

मुम्बई (एजेंसी)। बांग्लादेश के खिलाफ इसी माह 19 सितंबर से शुरु हो रही टेस्ट सीरीज में इंडिया ए टीम के युवा गेंदबाज आकाशदीप को भारतीय टीम में अवसर मिल सकता है। आकाश दीप ने घरेलू टूर्नामेंट दलीप ट्रॉफी में शानदार गेंदबाजी करते हुए इंडिया बी के बल्लेबाजों को जमकर परेशान किया है। आकाशदीप ने पहली पारी में 4 विकेट लेने के बाद दूसरी पारी में भी 5 विकेट लिए हैं। अवसर मिला जिसमें उन्होंने अच्छी गेंदबाजी करते हुए 3 विकेट लिए। उन्हें टीम में जगह मिलना इसलिए भी तय है क्योंकि अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी अभी तक चोट से नहीं उबरे हैं। इसी कारण शमी बांग्लादेश के खिलाफ 2 मैचों की टेस्ट सीरीज में नहीं खेलेंगे। इसके अलावा भारतीय टीम के जो खिलाड़ी दलीप ट्रॉफी खेल रहे हैं। उनमें से कई खिलाड़ियों का प्रदर्शन अब तक अच्छा नहीं रहा है। ऐसे में इन खिलाड़ियों को बाहर बैठना पड़ सकता है। वहीं सिराज बिमार होने के कारण दलीप ट्रॉफी के शुरुआती दौर स बाहर हैं हालांकि उनके बांग्लादेश के खिलाफ सीरीज तक ठीक होने की संभावना है। इस साल के बचे हुए महीनों में भारतीय टीम को 10 टेस्ट मैच खेलने हैं।

रुपया सीमित दायरे में, 83.96 डॉलर पर खुला

मुंबई (एजेंसी)। घरेलू शेयर बाजार में नरम रुख के बीच सोमवार को रुपया सीमित दायरे में कारोबार करता हुआ। एक पैसे मजबूत होकर 83.94 प्रति डॉलर पर पहुंच गया। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि कच्चे तेल की कीमतों में नरमी तथा डॉलर सूचकांक में समग्र कमजोरी से रुपये को समर्थन मिला। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया एक पैसे मजबूत होकर 83.96 प्रति डॉलर पर खुला। शुरुआती सौदों के बाद 83.85 पर पहुंच गया गया। बाद में फिर यह 83.95 प्रति डॉलर पर आ गया जो पिछले बंद भाव के बराबर है। रुपया शुक्रवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 83.95 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की मजबूती को परखने वाला डॉलर सूचकांक 0.10 प्रतिशत की गिरावट के साथ 101.28 अंक पर रहा।

दादा ने यों कहा आकाश दीप पर रहेगी सभी की निगाहें

कोलकाता (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने बांग्लादेश के खिलाफ घरेलू मैदान पर शुरू होने वाले दो मैचों की श्रृंखला के पहले टेस्ट के लिए टीम की घोषणा की, टीम में तेज गेंदबाज आकाश दीप और यश दयाल को शामिल किया गया। पूर्व भारतीय कप्तान सौरव गांगुली ने आकाश दीप को उन खिलाड़ियों में से एक के रूप में नामित किया है, जिस पर बांग्लादेश के खिलाफ 19 सितंबर से शुरू होने वाली भारत की दो मैचों की टेस्ट श्रृंखला के लिए हर किसी को नजर होनी चाहिए। बांग्लादेश के खिलाफ 2 मैचों की सीरीज 19 सितंबर से शुरू होगी। पहला टेस्ट चेन्नई में और दूसरा टेस्ट 27 सितंबर से कानपुर में होगा।

ऋषभ पंत, लोकेश राहुल और शुभमन गिल को दलीप ट्रॉफी के दूसरे दौर से आराम

अनंतपुर (एजेंसी)। ऋषभ पंत, लोकेश राहुल और शुभमन गिल सहित बांग्लादेश के खिलाफ पहले क्रिकेट टेस्ट के लिए टीम में चुने गए अधिकतर खिलाड़ियों को 12 सितंबर से दलीप ट्रॉफी के दूसरे दौर से मंगलवार को आराम दिया गया। रविवार को टीम में आकाश दीप, कुलदीप यादव, अक्षर पटेल, यशस्वी जायसवाल और ध्रुव जुरेल को जगह दी गई थी। इन सभी को दूसरे दौर में खेलने से छूट दी गई है। तेज गेंदबाज यश दयाल और सरफराज खान को हालांकि दलीप ट्रॉफी से नहीं बाहर किया गया है, जिससे संकेत मिलते हैं कि वे बांग्लादेश के खिलाफ भारतीय एकादश का हिस्सा नहीं बनने वाले है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने कहा, 'चयनकर्ताओं ने गिल के विकल्प के तौर पर प्रथम सिंह (रेलवे), लोकेश राहुल के विकल्प के तौर पर अक्षय वाडकर (विदर्भ) और जुरेल के विकल्प के तौर पर एसके रशीद (आंध्र) को चुना है। बीसीसीआई के अनुसार, स्पिनर शम्स मुलानी टीम में कुलदीप की जगह, जबकि आकाश की जगह आकिब खान (उत्तर प्रदेश) को चुना गया है। गिल की जगह मयंक अग्रवाल को भारत 'ए टीम का कप्तान बनाया गया है। जायसवाल और पंत के विकल्प के तौर पर चयनकर्ताओं ने सुयश प्रभुदेसाई और रिंकू सिंह को चुना है। भारत 'डी टीम में अक्षर के स्थान पर निशांत संधू को जगह मिली है। तेज गेंदबाज तुषार देशपांडे हल्की चोट के कारण बाहर हो गए हैं। रुतुराज गायकवाड़ की अगुआई वाली भारत 'सी टीम में कोई बदलाव नहीं किया गया है। दिसंबर 2022 के बाद पहली बार लाल गेंद का क्रिकेट खेलते हुए पंत ने दलीप ट्रॉफी के पहले मैच में प्रभावित किया था। लोकेश राहुल और आकाश दीप ने भी अच्छा प्रदर्शन किया।

अपडेट टीम इस प्रकार हैं - भारत ए = मयंक अग्रवाल (कप्तान), रियान पराग, तिलक वर्मा, शिवम दुबे, तनुश कोटियान, प्रसिद्ध कृष्णा, खलील अहमद, आवेश खान, कुमार कुशाग्र, शाश्वत रावत, प्रथम सिंह, अक्षय वाडकर, एसके रशीद, शम्स मुलानी और आकिब खान।

भारत बी - अभिमन्यु ईश्वरन (कप्तान), सरफराज खान, मुशीर खान, नितीश कुमार रेड्डी, वाशिंगटन सुंदर, नवदीप सैनी, मुकेश कुमार, राहुल चाहर, आर साई किशोर, मोहित अवस्थी, एन जगदीशन, सुयश प्रभुदेसाई, रिंकू सिंह और हिमांशु मंत्री।

भारत डी - श्रेयस अय्यर (कप्तान), अथर्व ताइडे, यश दुबे, देवदत्त पडिक्कल, रिकी भुई, सारांश जैन, अर्शदीप सिंह, आदित्य ठाकरे, हर्षित राणा, आकाश सेनगुप्ता, केएस भरत, सौरभ कुमार, संजू सैमसन, निशांत संधू और विद्वथ कावेरप्पा।

राइट-आर्म मीडियम नहीं, ना राइट-आर्म फास्ट यह गलत है : बुमराह

नई दिल्ली। जसप्रीत बुमराह तेज गेंदबाज के लिए छोटा रन-अप एक सख्त हाथ की गेंदबाजी एक्शन के साथ खत्म होता है जिसे कोचिंग मैनुअल कभी स्वीकार नहीं कर सकता लेकिन बुमराह ने न केवल उस अजीबोगरीब एक्शन के साथ प्रदर्शन किया है, बल्कि दुनिया भर के बल्लेबाजों के लिए खतरा भी बन गए। मुंबई इंडियंस के लिए 2013 आईपीएल के साथ बड़े मंच पर अपनी मौजूदगी के बाद से इस गेंदबाज ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। सोशल मीडिया पर एक दिलचस्प वीडियो सामने आया है, जो मुंबई इंडियंस के साथ उनके डेब्यू साल का है, जिसमें एक युवा बुमराह के बारे में प्रकाशित एक स्टोरी में उन्हें राइट आर्म मीडियम कहे जाने पर बुमराह ने आपत्ति जताते नजर आ रहा है। उन्हें किसी से यह कहते सुना जा सकता है, यह गलत लिखा है। राइट-आर्म मीडियम नहीं है ना, राइट-आर्म फास्ट है। आईपीएल में अपना जलवा दिखाने के तीन साल बाद बुमराह ने जनवरी 2016 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे में भारत के लिए खेला था। इसके तीन दिन बाद उन्होंने टी20आई में पदार्पण किया और जनवरी 2018 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ केपटाउन में पहली बार टेस्ट जर्सी पहनी और खेला।

इस बार आईपीएल मेगा नीलामी में उतरेंगे स्मिथ

सिडनी (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के अनुभवी बल्लेबाज स्टीव स्मिथ को इस बार इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में अवसर मिलने की उम्मीद है। उनका मानना है कि मेजर लीग क्रिकेट (एमएलसी) में अपने अच्छे प्रदर्शन का लाभ उन्हें मिलेगा। इससे वह टी20 के भी अच्छे खिलाड़ी साबित हुए हैं। इसलिए उन्हें आईपीएल के अगले सत्र में अवसर मिल सकता है , इसलिए वह इस बार मेगा नीलामी में उतरेंगे। स्मिथ को टी20 विश्व कप के बाद स्कॉटलैंड एवं इंग्लैंड के आगामी दौरे के लिए शामिल नहीं किया गया था। एमएलसी में स्मिथ के शानदार प्रदर्शन से वाशिंगटन फ्रीडम को पहली बार लीग खिताब मिला। स्मिथ ने इस लीग में 49.00 की औसत और 154.74 के स्ट्राइक रेट से 294 रन बनाये। वह अपनी टीम की ओर से सबसे अधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी रहे। स्मिथ ने फाइनल में भी सैन फ्रांसिस्को यूनिकॉर्न के खिलाफ 52 गेंदों में तेजी से 88 रन बनाये थे। सैन फ्रांसिस्को यूनिकॉर्न में पैट कमिंस और हारिस रउफ जैसे तेज गेंदबाज शामिल थे। स्मिथ ने कहा, 'मैं निश्चित रूप से आईपीएल में एक और अवसर चाहूंगा। मैं अपना नाम खिलाड़ियों की नीलामी में शामिल करूंगा। देखते है कि मुझे आगे बढ़ने का कितना अवसर मिलता है। उन्होंने कहा, 'मुझे हाल में टी20 क्रिकेट और फ्रेंचाइजी में जो भी अवसर मिले हैं, मैंने काफी अच्छा खेला है। ऐसे में मैं आईपीएल में अपना नाम शामिल कर इसका आनंद उठाना चाहूंगा। स्मिथ को पिछली दो नीलामी में किसी ने भी नहीं खरीदा था। ऐसे में वह 2021 से आईपीएल का मे नहीं खेल पाये हैं। इस बल्लेबाज का कहना है कि वह इससे निराश नहीं हुए और उनका ध्यान अपने खेल पर रहा है। टी20 टीम में जगह नहीं मिलने पर उन्होंने कहा, 'अंतरराष्ट्रीय टी20 की बात करूं तो मुझे नहीं पता वहां चयनकर्ता के बीच क्या चल रहा है।

सोने के वायदा भाव 71,500 रुपए चांदी 83,000 रुपए के पार

नई दिल्ली (एजेंसी)। इस सप्ताह के पहले दिन सोमवार को सोने-चांदी के वायदा कारोबार में तेजी देखने को मिल रही है। दोनों के वायदा भाव तेजी के साथ खुले। सोमवार को सोने के वायदा भाव 71,500 रुपये के करीब, जबकि चांदी के वायदा भाव 83,000 रुपये के पार कारोबार कर रहे थे। वैश्विक बाजार में सोने-चांदी के वायदा भाव की शुरुआत तेजी के साथ हुई। सोने के वायदा भाव की शुरुआत तेजी के साथ हुई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का बेंचमार्क अक्टूबर कॉन्ट्रेक्ट 78 रुपये की तेजी के साथ 71,504 रुपये के भाव पर खुला। इस समय यह 90 रुपये की तेजी के साथ 71,516 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। चांदी के वायदा भाव की शुरुआत भी तेज रही। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क दिसंबर कॉन्ट्रेक्ट 210 रुपये की तेजी के साथ 82,967 रुपये पर खुला। इस समय यह 293 रुपये की तेजी के साथ 83,050 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। वैश्विक बाजार में सोने-चांदी के वायदा भाव की शुरुआत तेजी के साथ हुई। कॉमेक्स पर सोना 2,526.50 डॉलर प्रति औंस के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 2,524.60 डॉलर प्रति औंस था। इस समय यह 2.60 डॉलर की तेजी के साथ 2,527.20 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था। कॉमेक्स पर चांदी के वायदा भाव 28.27 डॉलर के भाव पर खुले, पिछला बंद भाव 28.18 डॉलर था। इस समय यह 0.18 डॉलर की तेजी के साथ 28.36 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था।

अवसर मिला तो आरसीबी की ओर से खेलूंगा : रिंकू

नई दिल्ली (एजेंसी)। बल्लेबाज रिंकू सिंह ने कहा है कि अवसर मिलने पर वह रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की ओर से भी खेलना चाहेंगे। रिंकू अभी कोलकाता नाइटराइडर्स (केकेआर) की ओर से आईपीएल में खेलते हैं। रिंकू के इस बयान से सभी हैरान हैं। रिंकू को आईपीएल में केकेआर की ओर से किये धमाके दार प्रदर्शन के कारण ही टीम इंडिया में भी जगह मिली है। रिंकू के अनुसार आईपीएल के अगले सत्र में यदि केकेआर की टीम ने उन्हें नहीं रखा तो वह आरसीबी जाकर विराट कोहली के साथ खेलना चाहेंगे। साल 2018 में रिंकू सिंह ने केकेआर की तरफ से आईपीएल में खेला था। आईपीएल ओर घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन के बाद साल उन्हें भारतीय टी20 टीम में जगह मिली थी। वहीं दिसंबर 2023 में उनको दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ एकदिवसीय में डेब्यू का अवसर मिला। रिंकू का करियर संघर्ष भरा रहा। घरेलू क्रिकेट में अच्छे प्रदर्शन से उन्हें इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में जगह दिलाई, जहां उन्हें 2017 में किंग्स इलेवन पंजाब और बाद में 2018 में कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) ने खरीदा। आईपीएल में रिंकू को शुरुआत में अपनी जगह बनाने में संघर्ष करना पड़ा। उन्होंने अपना ज्यादातर समय बाहर बैठकर बिताया। हालांकि 2022 के सीजन में उनकी किस्मत बदल गई, जहां उन्होंने सात मैचों में 34.80 की औसत और 148.72 की स्ट्राइक रेट से 174 रन बनाए। इस प्रदर्शन ने केकेआर के मुख्य कोच ब्रेंडन मैकुलम का ध्यान खींचा जिन्होंने रिंकू की प्रशंसा की और युवा खिलाड़ी की सफलता पर अपनी खुशी व्यक्त की। 2023 का सीजन रिंकू के लिए सबसे अच्छा साबित हुआ। उन्होंने लगातार अच्छा प्रदर्शन किया और 14 मैचों में 59.25 की औसत और 149.52 की स्ट्राइक रेट से 474 रन बनाकर केकेआर के लिए सबसे ज़्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी बने।

मिड रेंज सेगमेंट में वीवो वाय300 प्रो लॉन्च

नई दिल्ली (एजेंसी)। मिड रेंज सेगमेंट में कंपनी ने वीवो वाय300 प्रो को लॉन्च कर दिया गया है। इसकी मिड-रेंज होने के बावजूद इसमें दमदार 6500एमएएच बैटरी दी जाती है। फोन में 120 एचझेड रिफ्रेश रेट के साथ 6.77-इंच की डिस्प्ले मिलता है, और ये स्नैपड्रैगन 6 जेन 1 एसओसी पर काम करता है। ग्राहक इस फोन को चार कलर ऑप्शन और चार रैम और स्टोरेज वेरिएंट में उपलब्ध कराया जा रहा है। वीवो वाय300 में फीचर्स के तौर पर 6.77 इंच का फुल-एचडी+ (1,080म2,392 पिक्सल) अमोलेड डिस्प्ले मिलता है, जिसका रिफ्रेश रेट 60 एचझेड, 90एचझेड और 120एचझेड के बीच है। इसमे 5,000 नीटस की पीक ब्राइटनेस मिलता है। ये फोन 4 एनएम स्नैपड्रैगन 6 जेन 1 एसओसी और एड्रेनो 710 जीपीयू के साथ 12जीबी रैम और 512जीबी तक स्टोरेज मिलती है। कैमरे के तौर पर वीवो वाय300 प्रो में डुअल रियर कैमरा सेटअप मिलता है, जिसमें एफ/1.79 अपर्चर के साथ 50-मेगापिक्सल का प्राइमरी सेंसर और एफ/2.4 अपर्चर के साथ 2-मेगापिक्सल का सेकेंडरी शूटर है। सेल्फी और वीडियो कॉलिंग के लिए इसमें एफ/2.0 अपर्चर वाला 32-मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा दिया जाता है। पावर के लिए फोन में 6,500 एमएएच बैटरी मिलती है, और ये 80वॉट फास्ट चार्जिंग सपोर्ट के साथ आती है। वीवो वाय300 प्रो पर कनेक्टिविटी ऑप्शन के तौर पर ब्लूटूथ 5.1, जीपीएस/एजीपीएस, ग्लोनास, गैलीलियो और वाई-फाई शामिल हैं। इसमें एक्सेलेरोमीटर, एंबियंट लाइट सेंसर, ई-कंपास, जायरोस्कोप और एक प्रॉक्सिमिटी सेंसर भी है। ऑथेंटिकेशन के लिए इस फोन में इन-डिस्प्ले फिंगरप्रिंट सेंसर मिलता है। बता दें कि फिलहाल इस फोन को चीन में पेश किया गया है और उम्मीद है कि इसे जल्द ही भारत में पेश किया जाएगा। वीवो वाय300 प्रो की कीमत टॉप-एंड 12जीबी रैम + 512जीबी स्टोरेज वेरिएंट के लिए सीएनवाय 2,499 (लगभग 29,000 रुपये) रखी गई है।वहीं इसके 12जीबी + 256जीबी, 8जीबी + 256जीबी और 8जीबी + 128जीबी रैम और स्टोरेज मॉडल की कीमत क्रमश: सीएनवाय 2,199 (लगभग 26,000 रुपये), सीएनवाय 1,999 (लगभग 23,000 रुपये), और सीएनवाय 1,799 (लगभग 21,000 रुपये) है।

बारिश में आपूर्ति प्रभावित होने से सब्जियां हुई महंगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। अगस्त और सितंबर में ज्यादा बारिश होने से प्रमुख शहरों में सब्जियों की आपूर्ति प्रभा?वित हुई और इसके दाम भी बढ़ चुके हैं। हरी सब्जियों में सबसे ज्यादा दाम धनिया के बढ़े हैं। दिल्ली में बीते एक महीने के दौरान धनिया के दाम 350 प्रतिशत बढ़ गए हैं। मुंबई में पालक के दाम 100 प्रतिशत बढ़े हैं। सब्जियों की आपूर्ति बाधित होने का बाजारों पर अलग- अलग प्रभाव पड़ता है। इसका कारण यह है कि कई सब्जियों का उत्पादन स्थानीय स्तर पर होता है और वे जल्दी खराब हो जाती हैं। मूसलाधार बारिश का असर मंडियों के कारोबार पर भी पड़ता है। मंडी में फसलों की ज्यादातर खरीद और बिक्री खुले आसमान के नीचे होती है और मंडियों में कुछ ही स्थानों पर सब्जियों की खरीद फरोख्त ढके हुए स्थान के नीचे होती है। अगले कुछ महीनों के दौरान बारिश प्रमुख फसल उत्पादक क्षेत्रों में जारी रहती है तो दाम बढ़ने से स्थिति और खराब भी हो सकती है। केंद्र सरकार ने देश भर में नेफेड और एनसीसीएफ के जरिये सस्ते में प्याज की बिक्री शुरू कर दी है। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपाई) की आधार मुद्रास्फीति जुलाई 2024 में सुस्त होकर 5.06 प्रतिशत हो गई थी जबकि यह जून में 8.36 प्रतिशत थी। बहरहाल, अगस्त और सितंबर में सब्जियों के दाम बढ़ गए हैं। हालांकि यह देखना बाकी है कि बढ़े हुए दाम कब तक आम आदमी की जेब पर अत्यधिक भारी नहीं पड़ते हैं।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में भारतीय टीम को घेरने रणनीति बना रहे कमिंस

मेलबर्न (एजेंसी)। इस साल के अंत में होने वाली बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के लिए ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम के कप्तान पैट कमिंस ने अपनी तैयारियां तेज कर दी हैं। इसी के तहत ही वह भारतीय टीम के खिलाफ अपनी रणनीति बनाने में लग गये हैं। कमिंस का इरादा ऑलराउंडर कैमरून ग्रीन और मिशेल मार्श के जरिये भारतीय टीम को घेरने का रहेगा। ये दोनो ही अब तक बल्लेबाजी पर अधिक जोर देते रहे हैं पर अब कमिंस चाहते हैं कि यह दोनों ऑलराउंडर पांच टेस्ट मैचों की सीरीज में टीम के तेज गेंदबाजों का अधिक सहयोग करें। ग्रीन ने आईपीएल में मुंबई इंडियंस के लिए खेला है जबकि पिछले सत्र में उन्होंने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के लिए खेले थे। ऐसे में ये जानते हैं कि रोहित शर्मा और विराट कोहली कब कैसे फैसले लेते हैं। कमिंस ने एक कार्यक्रम के दौरान कहा, टीम में ऑलराउंडर होने से लाभ मिलता है। पिछले कुछ वर्षों में हम उनका उतना उपयोग नहीं कर पाए जितना हमने सोचा था। यह अच्छी बात है। उन्होंने कहा पर इन गर्मियों के सत्र में कुछ अलग करते हुए हम ग्रीन और मार्श को गेंदबाजी में थोड़ा अधिक जिम्मेदारी दे सकते हैं। साथ ही कहा कि ग्रीन जैसे खिलाड़ी ने शील्ड क्रिकेट में गेंदबाज के रूप में शुरुआत की थी पर टेस्ट मैचों में उसे ज्यादा गेंदबाजी नहीं करनी पड़ी। अब वह पहले से अधिक परिपक्व हो गया है। मुझे लगता है कि हम उस पर थोड़ा और अधिक आधारित रहेंगे। ग्रीन ने अब तक 28 टेस्ट मैचों में 35.31 के औसत से 35 विकेट लिए हैं। कमिंस ने कहा टीम के लिए खुशी की बात है कि उसके पास नाथन लियोन जैसा स्पिनर है। जिससे कई ओवर कराये जा सकते हैं।

अमेज़न पर इलेक्ट्रॉनिक फेस्टीव सेल की शुरुआत

नई दिल्ली (एजेंसी)। कामर्शियल साइट अमेज़न पर इलेक्ट्रॉनिक फेस्टीव सेल प्रारंभ हो चुकी है। सेल मात्र पांच दिनों के लिए रखी गई है, और इसका आखिरी 10 सितंबर को है। सेल में एक से बढ़ कर एक ऑफर और डिस्काउंट दिया जा रहा है। लेकिन सबसे बेस्ट डील के तहत ग्राहक वनप्लस 11आर 5जी को काफी अच्छे ऑफर के साथ खरीद सकते हैं। अमेज़न पर मोबाइल सेक्शन पर ऑफर लाइव की किया गया है, और यहां से मिली जानकारी के मुताबिक वनप्लस 11आर 5जी को 39,999 रुपये के बजाए 28,999 रुपये में खरीदा जा सकता है। इस फोन की सबसे खास बात इसका 50 मेगापिक्सल मेन कैमरा है। आइए जानते हैं इस फोन के सभी फीचर्स के बारे में। फुल स्पेसिफिकेशंस की बात करें तो इस फोन में 120 एचेझेड रिफ्रेश रेट के साथ 6.74-इंच कर्व्ड अमोलेड डिस्प्ले दिया गया है। इसके फ्रंट में पंच होल नॉच मिलता है। साथ ही इसमें इन-डिस्प्ले फिंगरप्रिंट सपोर्ट भी मौजूद है।

ये स्मार्टफोन एंड्राएड 13 बेस्ड आक्सीजन ओएस 13 पर चलता है। वनप्लस 11आर में अड्रेनो 730 जीपीयू और 16जीबी तक एलपीडीडीआर 5एक्स रैम के साथ 4एनएम प्रोसेस बेस्ड ऑक्टा-कोर क्वालकॉम स्नैपड्रेगन 8+ जेन 1 प्रोसेसर मौजूद है कैमरे के तौर पर इस फोन के रियर में 50 मेगापिक्सल का प्राइमरी कैमरा, 8 मेगापिक्सल का अल्ट्रा-वाइड एंगल कैमरा और 2 मेगापिक्सल मैक्रो कैमरा दिया गया है। सेल्फी के लिए फोन के फ्रंट में 16 मेगापिक्सल का सेल्फी कैमरा मौजूद है। कनेक्टिविटी फीचर्स के तौर पर फोन में जीपीएस, वाई-फाई 6 और ब्लूटूथ 5.3 मिलता है। वहीं वनप्लस 11आर 5जी स्मार्टफोन 8.7एमएम मोटा है और इसका वजन 204 ग्राम है।पावर के लिए वनप्लस 11आर में 5000 एमएएच की बैटरी दी गई है और इसमें 100वॉट सुपरवॉक फास्ट चार्जिंग का सपोर्ट दिया गया है। इसमें डोल्बी अटमॉस सपोर्ट के साथ स्टीरियो स्पीकर्स भी दिए गए हैं। ग्राहक इसे ब्लैक और सिल्वर वाले दो कलर ऑप्शन में खरीद पाएंगे।

विभागों द्वारा अनावश्यक रूप से शिकायतों को ट्रांसफर नहीं करें : कलेक्टर

समय-सीमा प्रकरणों की बैठक में सीएम हेल्पलाइन की समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मैहर कलेक्टर रानी बाटड ने सोमवार को समय सीमा बैठक में सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों की विभागवार समीक्षा करते हुए कहा कि विभागों द्वारा अनावश्यक रूप से शिकायतों को ट्रांसफर नहीं किया जाये। उन्होंने कहा कि 11 से 18 सितंबर तक सभी विभाग अपने यहां लंबित शिकायतों के अधिकाधिक निराकरण के लिए अभियान चलाये। इसमें विशेष रूप से पुरानी शिकायतों के निराकरण पर फोकस करें। समय सीमा की बैठक में कलेक्टर ने यह निर्देश दिये है। इस अवसर पर अपर कलेक्टर शैलेन्द्र सिंह, एसडीएम आरती यादव, डॉ. आरती सिंह, उप संचालक सामाजिक न्याय सौरभ सिंह, जिला संयोजक जनजातीय कार्य कमलेश्वर सिंह, आरटीओ संजय श्रीवास्तव, डीपीसी विष्णु त्रिपाठी सहित विभाग प्रमुख अधिकारी उपस्थित थे।

कलेक्टर रानी बाटड ने विभागवार समीक्षा करते हुए कहा कि राजस्व में सबसे अधिक 1348 शिकायतें लंबित है। अपर कलेक्टर राजस्व की सीएम हेल्पलाइन की सतत समीक्षा करे। अगस्त माह में महिला बाल विकास की 1195, नगर पालिका 501, पीएचई 341, खाद्य 357, ऊर्जा 978, उच्च शिक्षा 37, श्रम आयुक्त 15, सामान्य प्रशासन 46, सामाजिक न्याय 48 शिकायतें लंबित पाई गई। कलेक्टर ने सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों को अनावश्यक रूप से दूसरे विभागों को ट्रांसफर की गई शिकायतों की समीक्षा की। इनमें सीईओ जनपद अमरपाटन की 165, मैहर नगर पालिका की 98, ग्रामीण विकास की 98, जेएसओ मैहर 82, तहसीलदार मैहर 82, तहसीलदार रामनगर 54, बीएमओ 42, सीईओ रामनगर 37, सीडीपीओ 36, जेई लक्ष्मण कुशवाहा द्वारा 36 शिकायतों को अनावश्यक बार-बार ट्रांसफर किया जाना पाया गया। कलेक्टर ने इन सभी अधिकारियों से नोटिस जारी कर स्पष्टीकरण प्राप्त करने के निर्देश दिये। विद्युत वितरण कंपनी के जेई लक्ष्मण कुशवाहा द्वारा एक शिकायत को 36 बार ट्रांसफर किये जाने पर कलेक्टर ने उस शिकायत को विवरण सहित निकलवाकर देखा। जिसमें पाया गया कि एक कॉलोनी के मकान में भवन स्वामी द्वारा विद्युत कनेक्शन काटने की विजय कुमार सिंह की एक शिकायत विभागों से संबंधित नहीं होने के बावजूद जेई मैहर से राजस्व, पुलिस, नगर पालिका, जनपद कार्यालय को ट्रांसफर करते हुए फारेस्ट रेंजर मझगवां को ट्रांसफर की गई है। अनावश्यक रूप से शिकायत को ट्रांसफर करने और उचित कार्यवाही या निराकरण नहीं करने पर जेई मैहर लक्ष्मण कुशवाहा को नोटिस जारी करने के निर्देश कलेक्टर ने दिये हैं। कलेक्टर ने कहा कि सभी अपनी पुरानी शिकायतों को फोकस कर संतुष्टिपूर्ण निराकरण करें, जो मांग या कार्यवाही नहीं की जा सकती है। उसे डिमाण्ड क्लोजर या फोर्स क्लोजर कराये। अगले सप्ताह तक मैक्सिमम सीएम हेल्पलाइन का निराकरण करें और सुनिश्चित करें कि जनवरी 2024 के पूर्व की कोई शिकायत लंबित नहीं रहे।

स्वच्छता ही सेवा अभियान 17 सितंबर से: कलेक्टर रानी बाटड ने 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक राज्य शासन के निर्देशानुसार चलने वाले स्वच्छता ही सेवा अभियान पखवाडे में सभी विभागों की सहभागिता सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने बताया कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में 17 सितंबर से एक साथ अभियान की गतिविधियां प्रारंभ होगी। नगर पालिका मैहर में प्रातः 9 बजे सभी विभाग प्रमुख अधिकारी-कर्मचारियों की उपस्थिति में अभियान का शुभारंभ होगा। इसके अलावा अभियान अवधि में प्रत्येक शनिवार के अवकाश में अधिकारी-कर्मचारी अपने कार्यालय परिसर और कार्य स्थल की साफ-सफाई करेंगे।

मैहर का गौरव दिवस 5 अक्टूबर को: कलेक्टर रानी बाटड ने बताया कि नवगठित जिला मैहर की स्थापना के एक वर्ष पूर्ण होने पर 5 अक्टूबर को मैहर का गौरव दिवस मनाया जायेगा। जिसमें प्रत्येक विभाग की भागीदारी और जिम्मेदारियों रहेंगी। कलेक्टर ने कहा कि गौरव दिवस मनाने के संबंध में विभागीय गतिविधियों की रूपरेखा और गतिविधियों की तैयारियां कर ले। गौरव दिवस की गतिविधियां 30 सितंबर से प्रारंभ हो जायेगी और मुख्य कार्यक्रम 5 अक्टूबर को होगा।

जिले में 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक कृशि पखवाडा का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। खरीफ 2024 एवं रबी 2024-25 को दृष्टिगत रखते हुये किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग एवं सहयोगी (एलाइड) विभागों को 17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2024 तक कृषि पखवाड़ा का आयोजन अभियान के रूप में संचालित विभागीय योजनाओं की जानकारी कृषकों को दी जायेगी। विशेष पखवाड़ा अंतर्गत किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग द्वारा योजनान्तर्गत लाभांवित कृषकों के खेतों में जाकर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन करते हुये एकीकृत पोषण एवं कीट प्रबंधन के साथ सामयिक तकनीकी जानकारी भी दी जायेगी। खरीफ 2024 अंतर्गत लाभांवित कृषकों का शत-प्रतिशत भौतिक सत्यापन करते हुये फोटोग्राफ्स एवं संगत जानकारी संधारित करें। फसलों की स्थिति पर कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां से संपर्क कर तकनीकी समाधान की समझाइस कृषकों को दी जायेगी।

कलेक्टर अनुराग वर्मा द्वारा जारी आदेशानुसार कृषि पखवाड़ा अंतर्गत रबी फसलों की तैयारी के संबंध में उर्वरकों का अग्रिम भण्डारण, उच्च गुणवत्ता के बीजों की उपलब्धता, खेतों की तैयारी एवं बीजोपचार के संबंध में भी जानकारी दी जायेगी। वर्तमान परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुये जैविक खेती संवर्धन हेतु जैविक कृषि आदानों एवं प्राकृतिक संसाधन आधारित खेती के लाभ एवं दूरगामी परिणाम के बारे में कृषकों को अवगत कराया जायेगा। जिन कृषकों को स्वाइल हेल्थ कार्ड प्राप्त हो गये हैं उन्हे कार्ड में तकनीकी सलाह एवं उर्वरकों का संतुलित उपयोग की सलाह दी जायेगी। कृषकों को किसान ऐप के माध्यम से विभागीय योजनाओं का कैसे लाभ प्राप्त हो, के संबंध में प्रक्रि या के बारे में जानकारी दी जायेगी। शासन से प्राप्त लक्ष्यों की पूर्ति हेतु मापदण्डों के अनुरूप तथा अजा., अजजा एवं महिला कृषकों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जायेगा। किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग के साथ-साथ सहयोगी (एलाइड) विभाग विकासखण्ड स्तरीय एवं मैदानी अमले की उपस्थिति सुनिश्चित करते हुये विशेष कृषि पखवाड़ा के आयोजन के संबंध में प्लान तैयार करेंगे।

मैहर नगर पालिका के वार्ड क्र.2 में हुआ 71.97 फीसदी मतदान

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मैहर नगर पालिका के वार्ड क्रमांक-2 में बुधवार को हुए मतदान में मतदान समाप्ति तक 71.97 प्रतिशत मतदान शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। उप चुनाव में वार्ड क्रमांक-2 के मतदाताओं के लिए तीन मतदान केन्द्र बनाये गये थे। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी रानी बाटड और प्रेक्षक अरूण पाण्डेय ने तीनों मतदान केन्द्रों का निरीक्षण कर मतदान प्रक्रि या और व्यवस्थाओं का जायजा लिया। अपर कलेक्टर एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी शैलेन्द्र सिंह, एसडीएम विकास सिंह तथा तहसीलदार जितेन्द्र पटेल ने भी मतदान केन्द्रों की मानीटरिंग की। मैहर नगर पालिका के मतदान केन्द्र क्रमांक-4 उदयपुर में 78 वर्षीय 0 नत्थूलाल त्रिपाठी और उनकी पत्नी 74 वर्षीय उत्तरा त्रिपाठी ने स्वतः मतदान केन्द्र पहुंचकर मतदान किया।

परियोजनाओं के निर्माण कार्यों को गुणवत्ता के साथ समय पर पूर्ण करें

मैहर कलेक्टर ने की निर्माण विभागों की समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मैहर कलेक्टर रानी बाटड ने सोमवार को निर्माण विभागों की बैठक लेकर जिले में चल रहे परियोजना और विकास निर्माण कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि विकास कार्यों की परियोजनाओं और निर्माण कार्यों को गुणवत्ता के साथ समय पर पूरा करें। इस अवसर पर एसडीएम अमरपाटन आरती यादव, कार्यपालन यंत्री आरईएस अश्विनी जायसवाल, पीआईयू श्री तिवारी, डीपीसी विष्णु त्रिपाठी, महाप्रबंधक जल निगम नीरव अग्रवाल सहित जल संसाधन, लोक निर्माण, एनवीडीए, प्रधानमंत्री ग्राम सडक योजना के अधिकारी उपस्थित थे।

कलेक्टर ने विभागवार चल रहे निर्माण कार्यों की समीक्षा की। ग्रामीण यांत्रिकी सेवा के कार्यपालन यंत्री ने बताया कि मैहर में 36 करोड 62 लाख रूपये के 51 कार्य स्वीकृत है। जिनमें 22 कार्य पूर्ण, 13 अप्रारंभ और 15 कार्य प्रगतिरत है। प्रधानमंत्री ग्राम सडक योजना में 125 लाख रूपये के 4 कार्य चल रहे हैं। कलेक्टर ने कहा कि बरसात बाद सभी कार्य दिसंबर तक पूर्ण कर लिये जाये। कलेक्टर ने कहा कि आरईएस के वृक्षारोपण और एक पेड मां के नाम कार्यक्रम में पौधे लगाये गये हैं। वहां पौधों की सुरक्षा के लिए एजेंसी से उचित स्वरूप में काम कराये।

लोक निर्माण विभाग पीआईयू ने बताया कि जिले में 17 भवन के कार्य स्वीकृत है। जिनमें मैहर के 11 में 10 कार्य प्रगति पर, अमरपाटन में 6 में से 5 कार्य प्रगति पर है। कलेक्टर ने जिले के पीआईयू के 2 अप्रारंभ कार्यों को शुरू करने और आवंटन के अभाव में अपूर्ण पडे कार्यों के लिए आवंटन का प्रस्ताव भेजने के निर्देश दिये। प्रधानमंत्री ग्राम सडक योजना की समीक्षा में बताया गया कि 58.10 किमी लम्बाई के 7 कार्य संचालित है। जिनमें 49 मीटर लम्बाई का ब्रिज भी शामिल है। समयावधि संधारण के कार्यों में 5 वर्षीय संधारण के 249 किमी के 70 कार्य, 5 वर्ष से 10 वर्ष तक के 213 किमी के 84 सडक मार्ग, 10 से 15 वर्ष के 256 किमी के 79 सडक मार्ग और 15 वर्ष से ऊपर के 33.02 किमी के 11 सडक मार्ग शामिल है। जिनमें संबंधित कार्य एजेंसी द्वारा संधारण कार्य किया जा रहा है। नर्मदा घाटी विकास की समीक्षा में बताया गया कि बरगी नहर की रीवा शाखा नहर 3 किमी कार्य दिसंबर 2025 तक कंपलीट होगी। इस प्रोजेक्ट में मैहर जिले के 139 गांवों की 25 हजार 516 हेक्टेयर भूमि सिंचित होगी।

जल संसाधन विभाग ने बताया कि रामनगर में 387 करोड की सूक्ष्म सिंचाई वृहद योजना में 152 गांव लाभांवित होंगे और 20 हजार हेक्टेयर में सिंचाई होगी। अधियारी सागर बांध से 9 गांव की 1880 हेक्टेयर शारदा सागर बांध से 5 गांव की 460 हेक्टेयर, घुनवारा बांध से 275 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई होगी। लगभग 430 करोड की इन सिंचाई योजनाओं से मैहर जिले के 196 गांव लाभांवित होंगे तथा 22615 हेक्टेयर में अतिरिक्त सिंचाई क्षमता विकसित होगी। गिदुरहाई तालाब योजना लागत 8.37 करोड से 240 हेक्टेयर में सिंचाई होगी। लोक निर्माण विभाग द्वारा बताया गया कि मैहर में सीआरएफ से 178 करोड की लागत से कुल 61 किमी में से 10 किमी सडक का कार्य हो रहा है। 97 करोड 76 लाख से 50.56 किमी के 11 कार्य स्वीकृत है।

सड़क पर काम कर रहे युवक पर से गुजरा लेवलर

बाल-बाल बचा, गढ्ढे में नल कनेक्शन की मरम्मत के दौरान आ गई मशीन

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। सतना में एक अनोखा वाक्या हुआ, यहां एक युवक के ऊपर से लेवलर मशीन गुजर गई लेकिन उसे खरोंच तक नहीं आई। इस घटना का वीडियो भी सामने आया है। दरअसल, गोशाला चौक रोड पर एक गढ्ढे के पास नल कनेक्शन मरम्मत का काम कर रहे अमित सोनी को लेवलर मशीन ने अपनी चपेट में ले लिया। मशीन उसके ऊपर से गुजर गई और फिर वापस भी हुई लेकिन यह ऊपर वाले का करिश्मा ही था कि अमित को खरोंच तक नहीं आई।

ऊपर से मशीन हटते ही वह उठा और मशीन ऑपरेटर पर नाराज हो गया। उसने ऑपरेटर को खूब फटकारा। वहीं आसपास के लोग भी ऑपरेटर पर बरस पड़े। हालांकि लापरवाही ऑपरेटर की थी और उसकी यह गलती अमित की जान भी ले सकती थी। यह घटना सोमवार की है जिसका सीसीटीवी फुटेज आज सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

बताया जाता है कि अमित सोनी सीवर लाइन के लिए हुई खोदाई के दौरान क्षतिग्रस्त पानी की पाइप लाइन ठीक कर रहा था। उस वक्त वहां ठेका कंपनी पीपीएस बिल्डर्स की लेवलर मशीन भी चल रही थी लिहाजा उसने मशीन ऑपरेटर को बताया कि वह गढ्ढे में काम करने जा रहा है इसलिए वह मशीन संभाल कर चलाए और उधर न लाए। लेकिन ऑपरेटर ने शायद उसकी बात को संजीदगी से नहीं लिया।

अमित गढ्ढे के पास पाइप लाइन ठीक ही कर रहा था कि तभी लेवलर मशीन उसकी तरफ आई और गढ्ढे के ऊपर से होती हुई वापस हो गई। अमित का कहना है कि वह गढ्ढे के अंदर दुबक गया जबकि ऑपरेटर कहता है कि उसने ब्रेक लगा कर मशीन वापस ले ली। अमित ने अभी तक घटना की शिकायत पुलिस से नहीं की है।

रिश्तेदार बनकर कार में दी लिफ्ट, जेब काट कर उड़ा लिए बुजुर्ग के 20 हजार रुपए

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। बुजुर्गों को लगातार निशाना बना रही शातिर बदमाशों की गैंग ने एक और वृद्ध को अपना शिकार बना लिया है। बदमाशों ने बुजुर्ग को रिश्तेदारी के झांसे में लेकर उसकी जेब से 20 हजार रुपए कैश पार कर दिया जानकारी के मुताबिक, मैहर जिले के अमरपाटन कस्बे में कार सवार बदमाशों ने वृद्ध को 20 हजार का चूना लगा दिया है। घटना मंगलवार की है। बताया जाता है कि सतना जिले के रामपुर बाघेलान थाना अंतर्गत ग्राम चोरहटा निवासी बुजुर्ग मुन्ना लाल

कहार रकम निकालने स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की अमरपाटन ब्रांच गए थे।

मुन्ना लाल ने खाते से 20 हजार रुपए निकाले और बैंक से निकलने लगे तभी उन्हें कुछ युवक बैंक में ही मिल गए और आत्मीयता दिखाने लगे। उन युवकों ने बुजुर्ग से रिश्तेदारी भी बताई और यह कहते हुए कि वे भी उधर ही जा रहे हैं। मुन्ना लाल को अपनी कार में बीच में बैठा लिया। रास्ते में चलते हुए उन्होंने बातचीत के दौरान बेहद शातिराना तरीके से मुन्ना लाल की जेब काट ली और 20 हजार की नगदी पार कर दी। उन्होंने बुजुर्ग को बीच रास्ते मे उतार भी दिया और भाग गए। मुन्ना लाल ने घटना की शिकायत अमरपाटन पुलिस से की है। पुलिस बदमाशों की तलाश में सीसीटीवी फुटेज तथा अन्य सुराग तलाश रही है।

गौरतलब है कि अमरपाटन में दो दिन में हुई लगातार यह दूसरी घटना है। सोमवार को बदमाशों की गैंग ने जरमोहरा निवासी रामस्वरूप पांडेय को अपना शिकार बनाते हुए 2 लाख 40 हजार रुपए लूट लिए थे।

प्लेसमेंट ड्राइव आज मैहर में

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। जिला रोजगार कार्यालय सतना एवं शासकीय आईटीआई कॉलेज मैहर के सहयोग से 12 सितम्बर 2024 को प्रातः 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक शासकीय आईटीआई कॉलेज सरला नगर रोड कृषि उपज मण्डी के पास मैहर में रोजगार मेले का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें महिला एवं पुरूष आवेदक जो निर्धारित योग्यता पूरी करते है वह अपने मूल दस्तावेजों के साथ उपस्थित होकर योग्यता अनुसार रोजगार प्राप्त कर सकते है।

इसमें कंपनी आटो मोबाइल सेक्टर अहमदाबाद गुजरात में मशीन आपरेटर पद के लिए 10वीं, 12वीं, आईटीआई, डिप्लोमा, कंपनी मारूति सुजुकी (टेक्नोशिम टेऊनिंग) गुडगांव में प्रशिक्षण सह स्टायपेंड के लिए 10वीं में 50 प्रतिशत से अधिक, कंपनी क्युकार्ट प्राइवेट लिमिटेड (फ्लिपकार्ट) रीवा एवं जबलपुर संभाग के लिए डिलेवरी बाय को 10वीं पास, कंपनी स्पंदना स्फूर्ति फायनेंस लिमिटेड के सेल्स एक्सक्यूटिव सतना में 12वीं स्नातक तथा लिंकअप गरुप मैहर टीचर पद के लिए 12वीं पास आवेदक रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकते हैं। इस दौरान आवेदक की उम्र 18 से 30 वर्ष निर्धारित की गई है। आवेदक को अपने साथ बायोडाटा, आधार कार्ड, पैन कार्ड, ड्राइविंग लायसेंस, वोटर कार्ड, पासपोर्ट साइज के फेटो एवं शैक्षणिक योग्यता से संबंधित दस्तावेज साथ में लाना अनिवार्य है।

शांति सद्भावना, भाईचारे से मिलजुल कर मनायें त्यौहार : कलेक्टर

जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक में की अपील

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। जिले की गौरवशाली परंपरा के अनुरूप गणेशोत्सव, मिलाद-उन-नबी, नवरात्रि, दशहरा, दीपावली और आने वाले त्योहारों को शांतिपूर्ण, भाईचारे की भावना और सौहार्दपूर्ण वातावरण में मिलजुल कर मनाया जाएगा। इस आशय की अपील गुरुवार को कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी अनुराग वर्मा की अध्यक्षता में संपन्न शांति समिति की बैठक में की गई। इस मौके पर पुलिस अधीक्षक आशुतोष गुप्ता, अपर कलेक्टर स्वप्निल वानखड़े, आयुक्त नगर निगम शेर सिंह मीना, एसडीएम सिटी नीरज खरे, राहुल सिलाडिया, सीएसपी महेंद्र सिंह, कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण बीआर सिंह सहित समिति के सदस्य उपस्थित थे।

शांति समिति की बैठक में गणेश चतुर्थी पर प्रतिमाओं की स्थापना और 17 सितंबर को गणेश विसर्जन की व्यवस्थाओं पर चर्चा की गई। बैठक

में सभी त्यौहार आपसी समन्वय, भाईचारे की भावना और शांति, सौहार्द के वातावरण में मनाए जाने के संबंध में सहमति जताई गई। श्री गणेश प्रतिमाओं के विसर्जन के लिए शहर के ट्रांसपोर्ट नगर में कृत्रिम कुंड बनाया गया है। विसर्जन स्थल पर प्रकाश, पानी, सुरक्षा और साफ-सफाई के पर्याप्त इंतजाम किए जाएंगे। दुर्गा प्रतिमाओं के विर्सजन के लिए भी आगामी समय में इसी कुण्ड का उपयोग किया जायेगा।

कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी अनुराग वर्मा ने कहा कि गणेश प्रतिमाओं की सार्वजनिक स्थापना होने के बाद पंडाल और आयोजकों से चर्चा के लिए एसडीएम सिटी और सीएसपी पृथक से शांति समिति की बैठक आयोजित करेंगे। जिसमें विसर्जन के मार्ग और चल जुलूस के रूट के लिए आवश्यक व्यवस्थाओं पर चर्चा की जाएगी। शांति समिति की बैठक में कलेक्टर अनुराग वर्मा और पुलिस अधीक्षक आशुतोष गुप्ता ने जिले की गौरवशाली परंपरा के अनुरूप आगामी सभी त्यौहार शांति, भाईचारे की भावना और उल्लास पूर्वक मिलजुल कर मनाने की अपील जिले वासियों से की है। बैठक में पटाखा बाजार और हवाई अड्डे में होने वाले रावण दहन को भी लेकर चर्चा हुई।

समिति में सर्वसम्मति से अपील की गई है कि मिलाद-उन-नबी और गणेश विर्सजन नवरात्रि के प्रतिमा विर्सजन जुलूसों में अवांछित तत्वों और गडबडी करने वाले तत्वों से परहेज किया जाये। जुलूसों में अनावश्यक भीड-भाड नहीं हो और सुव्यवस्थित जुलूस के लिए शामिल लोगों की संख्या सीमित रहे। आतिशबाजी और पटाखा की दुकानों के लिए नारायण तालाब के समीप मेला ग्राउण्ड को स्थल के रूप में प्रस्तावित किया गया है। हवाई अड्डा का निर्माण हो जाने से यहां होने वाले रावण दहन का स्थल भी मेला ग्राउण्ड में किये जाने का निर्णय लिया गया है। नगर निगम द्वारा इस मेला ग्राउण्ड को और भी सुव्यवस्थित किया जायेगा।

कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक ने कहा कि जिले के नागरिकों में एक-दूसरे के धर्म का सम्मान करते हुए सभी वर्गों के लोगों की मिलजुल कर उत्साह से त्यौहार मनाने की गौरवशाली परंपरा रही है। जिले की समभाव और सद्भाव की सामूहिक परंपरा कायम रखते हुए सभी त्यौहार मिलजुल कर मनाये। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि सामान्य शिष्टाचार और नियमों का पालन सभी को करना चाहिए। सभी का यही भाव होता है कि अपने शहर अपने जिले की फिजा बिगडनी नहीं चाहिए। विर्सजन के दौरान जल संरचनाओं के निकट नहीं जाये ताकि असावधानी से कोई अप्रिय घटना से बचा जा सके।

स्वच्छता ही सेवा 2024 के लिए अंतर्विभागीय समिति गठित

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। कलेक्टर अनुराग वर्मा ने राज्य शासन के निर्देशानुसार 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक चलने वाले स्वच्छता ही सेवा 2024 अभियान में व्यापक भागीदारी के लिए संबंधित विभागों की भूमिका एवं सहभागिता हेतु अंतर्विभागीय समिति का गठन किया है। कलेक्टर अनुराग वर्मा की अध्यक्षता में गठित इस समिति में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत, आयुक्त नगर निगम, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, कार्यपालन यंत्री ग्रामीण यांत्रिकी सेवा, कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास, जिला शिक्षा अधिकारी, जिला परियोजना समन्वयक सर्व शिक्षा अभियान, परियोजना अधिकारी जिला शहरी विकास अभिकरण, उप संचालक सामाजिक न्याय, कार्यपालन यंत्री लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, जल संसाधन, उप संचालक कृषि, जिला सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी, जिला परियोजना समन्वयक आजीविका मिशन, जिला समन्वयक जन अभियान परिषद, खेल अधिकारी और समन्वयक नेहरू युवा केन्द्र को सदस्य के रूप में शामिल किया गया है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली में होता है मानक स्तर के चावल का वितरण

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। जिला प्रबंधक म.प्र. वेयर लाजिस्टिक कारपोरेशन आरके शुक्ला ने बताया कि सार्वजनिक वितरण प्रणाली में स्टेक चयन उपरांत ही मानक स्तर का चावल वितरण किया जाता है।

उन्होंने बताया कि गोदाम में जमा धान एवं चावल स्कंध के स्टेक में रखी बोरियों की फर्श से लगी निचली सतह मोइश्चर माइग्रेशन और कैपिलरी एक्सन आफवाटर के कारण नमी युक्त हो जाती है। यह एक सर्वमान्य वैज्ञानिक तथ्य है जिसमें केवल वारदाना खराब होकर काला पड जाता है। जो सही मौसम में 3-4 दिन में सूख जाता है। जिसे खराब बारदाने से निकालकर अच्छे वारदाने में भर दिया जाता है। ऐसी स्थिति उन गोदामों में ज्यादा होती है जहां विशेष रूप से डनेज के रूप में क्रेट्स एवं बास की चटाइयों का उपयोग होता है। जिला प्रबधंक ने इस प्रकार वारदाने की खराबी से चावल की गुणवत्ता में गिरावट होने से इंकार करते हुए इस प्रकार की खबरों का खंडन किया है।

स्टैण्डिंग कमेटी की बैठक आज

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मैहर नगर पालिका मैहर के वार्ड क्रमांक-2 के उप निर्वाचन 2024 सम्पन्न कराये जाने, मतगणना में पारदर्शिता एवं निष्पक्षता के लिए 12 सितंबर को प्रातः 11 बजे कलेक्टर कार्यालय के सभागार में जिला स्तरीय स्टैण्डिंग कमेटी की बैठक आयोजित की गई है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।